फरवरी–२०१६ ◆ वर्ष ४ ◆ अंक ९ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

फरवरी–२०१६

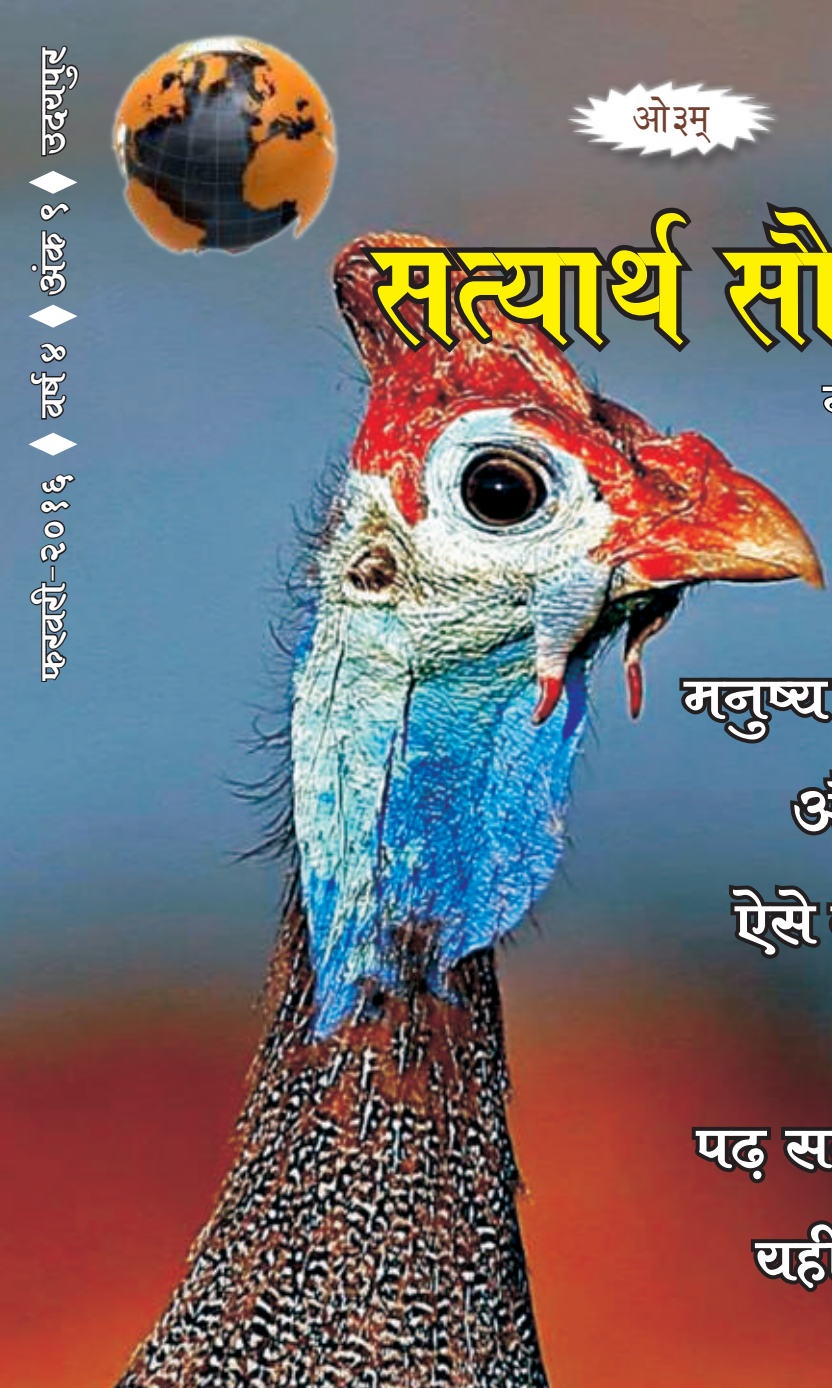

मनुष्य स्वयं में ज्ञानी बनता,
और करता है अहंकार।
ऐसे रंग न तुम रच सकते,
प्रभु कर्त्ता है मेरे यार।
पढ़ सत्यार्थप्रकाश देख लो,
यही मिलेगा उसमें सार॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ५०

प्रकृति जैसी शुद्धता
हमारी पहचान
MDH
मसाले
असली मसाले सच – सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Kitchen King
Chana masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थप्रकाश पहेली-२/१६
१०	सद्भाव के सूत्र
१२	स्वास्थ्य-जलने पर घरेलू उपचार
१३	यमान् सेवेत सततम्
१८	यजुर्वेद में पशु पालन
२०	कोशिश और सफलता
२१	नाप तोल कर चल
२३	MESSAGE OF A PRESIDENT
२५	भोगवादी संस्कृति के दुष्प्रभाव
२६	कथा सरित- मन का मनका फेर
२६	सत्यार्थ-पीयूष- राजधर्म क्या है?

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	११००० रु.	$ 1000
आजीवन	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय	४०० रु.	$ 100
वार्षिक	१०० रु.	$ 25
एक प्रति	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११६
माघ कृष्ण चतुर्दशी
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९१

February- 2016

स मा चा र २७

ह ल च ल २८

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - ९

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.), ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७६, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

पति और पत्नी का प्रेम

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
कीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। - ऋग्वेद १०/८५/४२ गतांक से आगे .....

गृहस्थ सुख का पाँचवा साधन है 'ज्ञान धारण'। जीवन में शुक्ल पक्ष भी है और कृष्ण पक्ष भी। यह जीवन केवल फूलों की शैय्या ही नहीं इसमें भयंकर काँटे भी बिछे हुए हैं। जीवन यात्रा पर चलने वाले प्रत्येक यात्री को इन काँटों में से कोई न कोई काँटा अवश्य चुभता है। ऐसा कोई जीवन यात्री नहीं जिसे कोई न कोई काँटा न चुभा हो। किसी को पहले चुभे, किसी को पीछे, कोई भी इन काँटों की चुभन से बच नहीं सकता। ये ऐसे भयंकर काँटे हैं जिनके चुभने पर व्यक्ति आत्मविश्वास और परमात्मविश्वास तक खो बैठता है। व्यक्ति को जीवन में अन्धकार दृष्टिगोचर होने लगता है। ऐसी विषम परिस्थितियों के बीत जाने पर भी व्यक्ति उनकी पीड़ा और कसक अनुभव करता रहता है। ये ऐसी विषम परिस्थितियाँ हैं जो जीवन के अमृत में विष घोल देती हैं। जीवन की ये विषम परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं:-

मनुष्य के शरीर में अंग भंग दोष- जैसे किसी की आँख, कान, नाक, एक बाजू, एक टाँग का नष्ट होना अथवा कई बार दोनों का ही नष्ट हो जाना। ऐसा अंग विकार जीवनभर के लिए दूषण बन जाता है। यह कमी व्यक्ति को जीवन भर खटकती रहती है। अविकलांगों के संसार में विकलांगों का रहना प्रायः घृणा, तिरस्कार, अपमान, उपहास और विकर्षण का कारण बनता है। किसी व्यक्ति का वर्षों तक रुग्ण रहना भी जीवन की एक विषम परिस्थिति है। व्यक्ति इस रुग्णावस्था से तंग आ जाता है। वह जीवन को अभिशाप समझता हुआ मृत्यु की कामना करने लगता है।

पति और पत्नी में प्रेम का न बन पाना और किसी भी कारणवश हृदयों का न मिल पाना जीवन की एक विषम परिस्थिति है। इसके कारण पति पत्नी दोनों झगड़ते रहते हैं और परित्याग तक की स्थिति आ जाती है।

पति और पत्नी के मर जाने पर पति अथवा पत्नी का दूसरा विवाह करना और नये पिता अथवा नई माता का पहली सन्तान के प्रति दुर्व्यवहार भी जीवन की एक भयंकर समस्या है। इसके कारण कई बार पहली सन्तान का जीवन अत्यन्त दुःखमय बन जाता है।

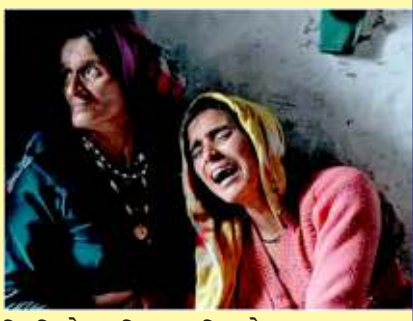

पिता की आकस्मिक मृत्यु के कारण बड़े बेटे पर बहुत भार आ पड़ता है। वह अप्रत्याशित गम्भीरता का अनुभव करने लगता है। उसे जीवन में निश्चिन्तता, प्रफुल्लता और विशेष उल्लास की अनुभूति नहीं होती जैसी प्रायः निश्चिन्त व्यक्ति अनुभव करते हैं। वह इस अप्रत्याशित भार से प्रायः दबा दबा सा रहता है। यह भी जीवन की एक विषम स्थिति है।

इसी प्रकार निर्धनता भी एक अभिशाप है। आय का कम होना और व्यय का अधिक होना गृहस्थ जीवन के लिए बहुत बड़ा अभिशाप है। संसार में लाखों परिवार इस विषम परिस्थिति के शिकार हैं।

सम्पन्नता से विपन्नता और सधनता से निर्धनता को प्राप्त होना जीवन की एक विषम परिस्थिति है। भूमि, सम्पत्ति और धन का नष्ट हो जाना इसी के अन्तर्गत आते हैं। व्यक्ति सर्वस्वसम्पन्न होता हुआ सर्वस्वविहीन हो जाता है।

सन्तान का उत्पन्न न होना गृहस्थ के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप है। सन्तान के बिना गृहस्थ सर्वथा सूना लगता है। सन्तान का होकर मर जाना, सन्तान न होने से भी बड़ा अभिशाप है। केवल लड़कियों का ही जन्म लेना और पुत्ररत्न की प्राप्ति न होना भी गृहस्थ का अभिशाप है। छः सात लड़कियों के पश्चात् लड़के का पैदा होना भी गृहस्थ का एक बहुत बड़ा सन्ताप है। सन्तान का अयोग्य होना माता-पिता के लिए बहुत सन्तापजनक है। ऐसे माता-पिता को भोजन भी विष तुल्य प्रतीत होता है। सन्तान का खो जाना और फिर न मिलना अथवा सन्तान का किसी के द्वारा मारे जाना, ये सब जीवन की विषम परिस्थितियाँ हैं।

माता-पिता, पति-पत्नी, नवयुवक पुत्र एवं पुत्री, नवयुवक दामाद एवं पुत्रवधू की मौतें जीवन के लिए बहुत बड़े अभिशाप हैं। जीवन की यह भयंकरतम परिस्थिति है जब मनुष्य के आत्मिक बल के परीक्षण का समय होता है।

माता-पिता, लड़के और लड़कियों के विवाह प्रसन्नता और सुख के लिए करते हैं परन्तु कई बार उन्हें शोक एवं विषाद ही पल्ले पड़ता है। लड़के का विवाह करने के पश्चात् कई बार पुत्रवधू ही ऐसी मिलती है कि माता-पिता का जीवन नरक तुल्य हो जाता है। कई बार लड़के ही विवाह के पश्चात् माता-पिता से मुँह मोड़ लेते हैं। माता-पिता को बहुत ही निराशा का मुँह देखना पड़ता है और जीवन उन्हें निस्सार प्रतीत होता है। कई बार लड़की का विवाह करने के पश्चात् माता-पिता का जीवन अत्यन्त शोचनीय हो जाता है, क्योंकि लड़की को कई बार पति, सास और श्वसुर अच्छे नहीं मिलते हैं लड़की के इस दुःख के कारण माता-पिता अत्यन्त क्लेशित रहते हैं।

गृहस्थ की ये विकट भयंकर समस्याएँ कई बार व्यक्ति के आत्मविश्वास को डांवाडोल कर देती हैं। कई बार व्यक्ति परमात्मविश्वास को भी खो बैठता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः निराश एवं हताश रहता है। उसके मनोमस्तिष्क पर एक दबाव सा पड़ा रहता है। वह चिन्ता और शोक की मुद्रा बनाए रखता है। उसकी आँखों के आगे अन्धेरा सा छाया रहता है। जैसे घुन काठ को खाता रहता है उसी प्रकार कोई समस्या ऐसे व्यक्ति को भी अन्दर ही अन्दर खोखला कर देती है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति का यदि कोई सहायक होता है तो केवल ज्ञान ही सहायक हो सकता है। ऐसे मनुष्य को चाहिए कि ज्ञान धारण करे और अपने मानसिक सन्तुलन को बिगड़ने न दे। यदि मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया तो दुःख और क्लेश के अतिरिक्त व्यक्ति को कुछ नहीं मिलता।

अब हम उन ज्ञानसूत्रों पर विचार करेंगे जिनके कारण उपरोक्त विषम परिस्थतियों में व्यक्ति का सन्तुलन बना रह सके।

जब मनुष्य पर कोई विपत्ति आ जाए तो वह पहला ज्ञान सूत्र यह धारण करे कि उस जैसे अनेक व्यक्ति संसार में हैं जो ऐसी अवस्था में हैं, केवल वह ही इस अवस्था में नहीं है। इस ज्ञान सूत्र को धारण करने से मनुष्य के मन को शांति मिलती है। व्यक्ति यह समझता है कि वह अकेला नहीं है जो इस दुःख में पड़ा हुआ है बल्कि उस जैसे भी अनेक हैं। यदि वह निर्धन है तो उस जैसे अनेक निर्धन हैं। यदि वह सन्तानहीन है तो उस जैसे भी अनेक सन्तानहीन हैं। यदि वह रुग्ण है तो उस जैसे भी अनेक रुग्ण हैं। जब श्रीरामचन्द्रजी वनवास को चलने लगे तो माता कौशल्या के दुःख को देखकर उन्होंने माता को धीरज बँधाते हुए जो कहा उसे कवि ब्रजनारायण चकबस्त ने इन शब्दों में प्रस्तुत किया है-

तुम ही नहीं हो कुश्ता-ए-नैरंगे-रोज़गार,
जुल्मत-कदा-ए-दहर में लाखों हैं सोगवार।
सख़्ती सही नहीं कि उठाई कड़ी नहीं,
दुनिया में क्या किसी पे मुसीबत पड़ी नहीं।

माताजी को धीरज बँधाते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी कहने लगे कि तुम ही युग के परिवर्तनों की मारी हुई नहीं हो। इस संसार के अँधेरे से भरे हुए घरों में लाखों व्यक्ति दुःखी हैं। संसार में ऐसा कौन सा व्यक्ति है जिसने कठोरता को सहन न किया हो और संसार में ऐसा कौन सा व्यक्ति है जिस पर कोई कष्ट न पड़ा हो? इस प्रकार की भावना जब व्यक्ति मन में लाता है तो उसके मन को सन्तोष प्राप्त होता है।

दूसरा ज्ञान सूत्र जो व्यक्ति को शांति देता है वह यह है कि हमसे भी गिरी हुई अवस्था के अन्दर अनेक व्यक्ति हैं। हम कई व्यक्तियों के बराबर हैं परन्तु बहुत व्यक्तियों से अच्छे हैं। जब व्यक्ति देखता है कि मैं अनेक व्यक्तियों से अच्छी अवस्था में हूँ तो उसको शांति मिलती है। कई बार व्यक्ति यह समझता है कि अमुक व्यक्ति उससे अधिक सुखी है परन्तु जब उसके निकट जाकर देखता है तो उसे पता चलता है कि वह तो उससे भी अधिक दुःखी है।

हुई जिनसे तवक्को ख़स्तगी के दाद पाने की।
वो हमसे भी जयादा कुश्ता-ए-तेग़े-सितम निकले।।

जिनसे हमें आशा थी कि वे हमारी खस्तगी (दुरवस्था) की प्रशंसा करेंगे, हमारी शोचनीय अवस्था को सराहेंगे, जब देखा गया तो वे हमसे भी अधिक अत्याचार की तलवार के मारे हुए निकले।

शेख सादी के जीवन की घटना हमारे लिए इस संदर्भ में बहुत शिक्षाप्रद है। एक दिन की बात है कि वे नंगे पाँव शीराज़ में प्रविष्ट हुए तो उन्हें बहुत लज्जा अनुभव हुई। वे सोचने लगे कि लोग क्या कहेंगे कि फारसी भाषा का इतना बड़ा विद्वान् नंगे पाँव चल रहा है। यह विचार उनके मस्तिष्क में आ ही रहा था कि उनकी दृष्टि एक ऐसे फकीर पर पड़ी जिसके दोनों पाँव ही

कटे हुए थे। उस फकीर को देखकर शेखसादी ने ईश्वर का तत्काल धन्यवाद किया- प्रभो! मैं इस व्यक्ति से तो कई गुणा अच्छा हूँ। मेरे पास तो जूतियाँ ही नहीं हैं परन्तु इसके पास तो पाँव ही नही हैं।

जो जिसके हक में देखा बेहतर बना दिया,
मुझको ग़रीब तुझको तवंगर बना दिया।
नादाँ ! मकामे-रश्क नहीं, जाए-शुक्र है,
सौ से बुरा तो एक से बेहतर बना दिया।।

जब व्यक्ति अपने से गिरे हुए व्यक्तियों की अवस्था देखता है तो उसके शोक का निवारण होता है।

- प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद संदेश)

क्रमशः .....

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सबसे बड़ा पुण्य है परहित,
परहित है सुख का आधार।
परहित के पथ पर बढ़ने से,
अपना बन जाता संसार।।

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १६ पर देखें।

सत्यार्थप्रकाश पहेली-२/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	द		२	स्ति	२		३	रो	३	
	४	दा	४			५		ष्य ५		त्र ५
६	ख	६	६			७	र	७	श्व	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. हमारा मत क्या है?
२. वेद की निन्दा करने वाला क्या कहाता है?
३. एक विषय में अनेकों का परस्पर विरुद्ध कथन हो, उसको क्या कहते हैं?
४. निमित्त कारण परमेश्वर की व्याख्या किस दर्शन शास्त्र में की है?
५. वेद पढ़ने का अधिकार किनको है?
६. किनके उपदेश से विद्या पढ़ने में अश्रद्धा हो जाती है?
७. किनकी बात अवश्य माननीय है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २३ का सही उत्तर

१. पूर्व	२. आठ	३. शब्द	४. नव
५. पृथिवी	६. तीन	७. ऐतरेय	८. कारण

''विस्तृत नियम पृष्ठ १७ पर पढ़ें एवं ₹ ५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मार्च २०१६

आत्मनिवेदन

ईश निन्दा

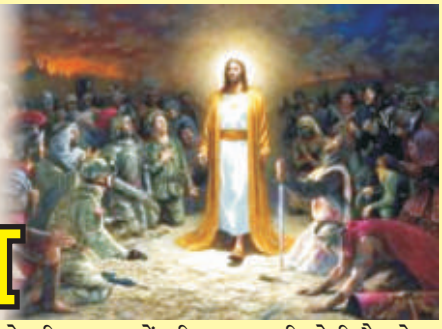

जब भी आप अन्य मनुष्यों के साथ रहते हैं विनिमय करते हैं तो आपको दूसरे की भावनाओं की कद्र करनी होती है। ऐसा नहीं हो सकता कि केवल आप कहें वही परिवार में हो। यही स्थिति समाज या राष्ट्र में है। अनेक विचारधारा राष्ट्र में बह रहीं हो सकतीं हैं आप उनसे सहमत नहीं भी हो सकते हैं परन्तु जब तक वह विचारधारा राष्ट्र या समाज के लिए कोई खतरा पैदा नहीं करती तब तक आपको उसके प्रति सहिष्णु होना चाहिए। यही सभ्य समाज का नियम है। यही मानवता की कसौटी है। हर व्यक्ति को स्वेच्छानुसार किसी भी विचारधारा के अनुगमन का, किसी भी उपासना पद्धति के पालन का व उसकी अभिव्यक्ति का अधिकार है। हाँ यह अवश्य है कि उसकी इस अभिव्यक्ति से किसी को ठेस न पहुँचे, किसी की भावनाएँ आहत न हों यह ध्यान उसे रखना चाहिए , साथ ही उसके किसी कदम से किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचना चाहिए।

वस्तुतः किसी भी सभ्य समाज में परस्पर के मतभेदों को मिटाने का एक ही स्वीकृत साधन हो सकता है, वह है स्वस्थ विचार-विमर्श। इस पद्धति को प्रोत्साहित करना चाहिए। मनुष्य को सदैव ज्ञान व सत्य की तलाश रहती है तथा इस तरह के विचार-विमर्श ही इसमें साधक हैं। इस सबमें सद्भाव आवश्यक है , कटुता के समावेश से बचना चाहिए।

भारत में गत दिनों मीडिया तथा कुछ वर्ग विशेष द्वारा जो माहौल बनाया जा रहा है कि भारत का बहुसंख्यक वर्ग असहिष्णु होता जा रहा है इसका जब विश्लेषण करते हैं तो पता चलता है कि इसमें कोई सच्चाई नहीं है। एक सुनिश्चित योजना के तहत एक भ्रम फैलाने की कोशिश की जा रही है। पुरस्कार वापिसी उसी का अंग है। भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की जो सीमा है वह शायद कहीं नहीं। मुझे स्मरण हो रहा है सऊदी अरब के एक युवक रईफ वदावी को एक बेव साईट बनाने, जिस पर वह स्वस्थ धार्मिक बहस को बढ़ावा देना चाहता था, के अपराध में पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। उस पर इलेक्ट्रोनिक माध्यम से इस्लाम की निंदा का आरोप लगाया गया और २०१३ में उसे ७ साल की सजा और ६०० कोड़ों की सजा सुनाई गयी। ९ जनवरी २०१५ को सैकड़ों लोगों के समक्ष उसे पहली किश्त के रूप में ५० कोड़े मारे गए। अपील करने पर उसकी सजा बढ़ाकर १० वर्ष तथा एक हजार कोड़े कर दी गयी। उसकी पत्नी और बच्चों को जान से मारने की धमकी मिलाने लगी। लिहाजा वदावी की पत्नी इन्साफ हैदर को भागकर अपने तीन बच्चों के साथ कनाडा में राजनीतिक शरण लेनी पड़ी।

"अगर आप नफरत की बजाय प्रेम को चुनते हैं, निराशा की जगह विश्वास और असहिष्णुता की जगह स्वीकारने को चुनते है, तो आप दुनिया को बदलने में अपना योगदान दे रहे हैं इसीलिए सहिष्णुता ही शांति का स्रोत है, और असहिष्णुता ही अव्यवस्था और लड़ाई का कारण है'- पिरे बायले ।"

राज्य द्वारा प्रायोजित यह असहिष्णुता ही वस्तुतः मानवता की विनाशक है।

पाकिस्तान में ईश-निंदा कानून बनाया गया है तथा किस तरह उसके अंतर्गत एक ईसाई महिला को मृत्यु दंड दिया गया है यह घटना संक्षेप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है -

वह जून का झुलसता हुआ महीना था। रोजाना की तरह ५० वर्षीय असिया बीबी अन्य महिलाओं के साथ खेत में काम कर

रही थी। एक महिला ने असिया को कहा कि कुएँ से पानी भर कर लादे। गला तो प्रचंड गरमी के कारण असिया का भी सूख रहा था उसने पानी भरकर अपनी सहकर्मी को पिलाने से पूर्व उसी बर्तन से स्वयं भी पानी पी लिया। इस बात को लेकर महिलाओं में कहा सुनी हुयी। असिया बीबी ईसाई महिला है जब कि अन्य सब मुस्लिम महिलाएँ थीं। उनका कहना था ईसाई असिया उनके बर्तन से पानी नहीं पी सकती। बात बढ़ती गयी। कहते हैं कि बहस धर्मों की तुलना तक पहुँच गयी। ईसा मसीह को बुरा-भला कहने पर असिया ने भी कह दिया कि तुम्हारे मोहम्मद साहब ने क्या किया हमारे ईसा तो लोगों के पाप लेकर सूली पर चढ़ गए। इसके बाद तो बात और बढ़ गयी। असिया की पिटायी करते हुए पूरे गाँव में घसीटा गया। असिया का पति आशिक मसीह जब शाम को घर आया तो पत्नी की हालत देख स्तब्ध रहा। पर विपरीत वातावरण में परिवार ने इस ज्यादती के खिलाफ चुप रहना ही श्रेयस्कर समझा। असिया दूसरी सुबह पूर्ववत् काम पर चली गयी। पाँच दिन पश्चात् स्थानीय मौलवी की अदालत में ईशनिंदा कानून के अंतर्गत असिया बीबी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया गया एवं चीखती चिल्लाती पाँच बच्चों की माँ असिया को पुलिस पकड़ कर कर ले गयी। असिया तो जेल में बंद हो गयी पर आशिक और उसके परिवार पर

अत्याचार और दबाब का सिलसिला चालू रहा। परिणामतः पूरे परिवार को कम से कम १५ बार अपना ठिकाना बदलना पड़ा। असिया को पाकिस्तान की एक अदालत ने मौत की सजा सुनाई। दुनिया भर के मानवाधिकार संगठनों में हलचल मच गयी।

पाकिस्तान में भी ईश निंदा कानून के कुछ विरोधी रहे हैं ,उनमें से पंजाब के गवर्नर श्री तासीर का नाम उल्लेखनीय है। श्री तासीर ने असिया को मृत्युदंड देने की भी खिलाफत की। पर कट्टरपंथी वातावरण में उन्हें इसकी कीमत तब चुकानी पड़ी जब कार में बैठते समय उनके ही गाड्र्स में से एक मुमताज हुसैन कादरी ने उनके ऊपर २६ बार गोली चला कर उनका प्राणांत कर दिया। पुलिस अरेस्ट में उसका बेख़ौफ़ बयान था कि असिया की तरफदारी करने के कारण उसने सलमान तासीर को मारा। बाद में कादरी ने खुलकर कहा कि उसने कुछ गलत नहीं किया। कादरी के समर्थन में अनेक प्रदर्शन पाकिस्तान में हुए वह जैसे राष्ट्रीय हीरो बन गया। बी.बी.सी. के अनुसार कादरी को मौत की सजा सुनाने वाले जज परवेज अलीशाह को इतनी धमकियाँ मिलीं कि उन्हें देश छोड़कर सऊदी अरेबिया जाना पड़ा।

२००० में ही एक अन्य शख्शियत को भी बलिदान देना पड़ा। पाकिस्तान के अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री एकमात्र इसाई मंत्री मुर्तजा बहिश्त को चरमपंथियों ने गोलियों से भून दिया। मुर्तजा पाकिस्तान के ईशनिंदा कानून के विरोधी थे तथा असिया बीबी को भी राष्ट्रपति की क्षमा दिलवाना चाहते थे। उन्हें कई बार मौत की धमकियाँ मिल रहीं थीं। उनकी कनाडा यात्रा में भी तालिबानी गुट ने उन्हें बाज आने को कहा था अन्यथा उनका सर कलम कर दिया जाएगा, पर मुर्तजा ने इसकी परवाह नही की नतीजा उनका क़त्ल कर दिया गया।

धर्म का उद्देश्य स्वयं को नियंत्रण में रखना है, ना की दूसरों की आलोचना करना -दलाई लामा ।

गत वर्ष वहादुद्दीन जकारिया विश्वविद्यालय मुल्तान के एक प्रवक्ता जुनैद हफीज के ऊपर विश्वविद्यालय के कट्टरपंथी छात्रों ने ईश निंदा का आरोप लगाया। उनकी ओर से रशीद रहमान वकील के तौर पर कार्य कर रहे थे। रहमान को कई बार धमकी मिली कि वे जुनैद की ओर से केस लड़ना बंद कर दें। रहमान ने इस पर ध्यान नहीं दिया नतीजतन उनके मुल्तान स्थित कार्यालय में अज्ञात बंदूकधारियों ने उन्हें गोलियों से भून दिया। उनके दो सहायक भी घायल हो गए। रहमान एक मानवाधिकार कार्यकर्ता भी थे।

गत दिनों भारत में असहिष्णुता को लेकर जानबूझकर एक ऐसा वातावरण बनाने की कोशिश की गयी कि ऐसा लगने लगे कि भारत अल्पसंख्यकों के लिए सर्वाधिक असुरक्षित देश बन गया है। क्या यह वास्तविकता है? कदापि नहीं। यह ठीक है कि दादरी में एक हत्या हुई, पर उसकी प्रशंसा किसने की?वह निश्चितरूपेण निंदनीय है। इस देश का बहुसंख्यक वर्ग अगर

असहिष्णु होता तो क्या डा. जाकिर हुसैन और डा. अब्दुल कलाम शीर्षस्थ पद पर अभिषिक्त हो पाते? क्या अजहर क्रिकेट टीम के कप्तान बनते?क्या तीनों खान करोड़ों ,अरबों में खेल पाते। आज भारत में अपने लिए खतरा महसूस करने वाले ध्यान देंगे कि विश्व में अन्य बड़े देश उन्हें किस दृष्टि से देखते हैं।

क्या वे नाइजीरिया, उज्बेकिस्तान, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, अंगोला, रूस, फ्रांस, चीन आदि की वर्तमान स्थिति से परिचित हैं?क्या उन्हें पता है कि आतंकवाद की पृष्ठभूमि का विश्लेषण कर ये राष्ट्र एक ही निष्कर्ष पर पहुँचे हैं और उन्होंने पाबंदी का दायरा केवल आतंकियों तक सीमित नहीं रखा है। इन देशों में इस्लामी जीवन पद्धति के अनेक अंगों को प्रतिबंधित कर दिया है।

एक समाचार के अनुसार ब्रूनेई, जहाँ सुलतान ने क्रिसमस मनाए जाने को कोई भी क्रिसमस मनायेगा उसे ५ वर्ष की जुर्माना देना पड़ेगा। सोमालिया में भी लगा दिया है। सऊदी अरब की तो बात ही ये देश छोड़कर जाने वाले क्या ऊपरलिखित एक ओर माँ के लाडले उसकी छोड़ जाते हैं तो दूसरी और कुछ समृद्धि का अर्जन कर कृतज्ञता की बात करते हैं। वस्तु स्थिति बहुसंख्यक वर्ग सदा से ही रहा है और आगे भारत के ही एक ईसाई समुदाय पर्याप्त संख्या में हैं, वहाँ के दंडनीय अपराध घोषित कर दिया है। जो जेल या तेरह लाख रुपयों के बराबर क्रिसमस और नववर्ष मनाने पर प्रतिबन्ध छोड़ दीजिये।

देशों में जाने वाले हैं?क्या विडम्बना है कि अस्मिता की रक्षा के लिए यह जहां तक लोग यहाँ की माटी में सब प्रकार की प्रकाशन की बात तो दूर, देश छोड़ने यह है कि इस देश का कुछ ज्यादा ही सहिष्णु भी रहेगा। वरना विश्वविद्यालय में एक आर्य विद्यार्थी को अपने जन्मदिवस के अवसर पर यज्ञ करने से नहीं रोका जाता और भारत के ही विश्वविद्यालय में भारत के ही प्रधानमंत्री को आमंत्रित न करने की बात उठती।

अतः राजनीतिक उद्देश्य के लिए जो नौटंकी गत दिनों खेली गयी है वह देश में प्रवाहमान समरसता के लिए शुभ नहीं है। इसकी पुनरावृत्ति न ही हो यह सम्पूर्ण समाज के लिए हितकर है।

– अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

अपने ऋषि से!

कितनी प्रचण्ड किरणों से तुमने,
जग में थी ज्योति फैलाई।
दिव्य दिवाकर ! अमर सुधारक !
स्पन्दित जिससे तरुणाई।।
कहाँ से इतनी ऊर्जाएँ, तुम्हे थीं मिल गई बोलो।
भ्रमण से, अध्ययन से या गुरु से ?,
राज तो खोलो।
था पग-पग पोपों का जमघट,
समस्याएँ-विकट संकट,
ऊँच और नीच की खाई, धर्म था द्वेष और झंझट।
उसी के तेज से तूने, क्रान्ति मशाल थी धधकायी।।
है स्पन्दित जिससे तरुणाई।।
तुम्हारी किरणों की ऊर्जा से,
विवशता थी, जो उठ बैठे,
कुछ ऐसे भी उदरम्भर थे, जो आँखे मून्द कर ऐंठे।
सजगता और सच्चाई पनपने लग गई सत्वर,
थी कैसी ऊष्मा और क्षमता,
स्वयं खींचने लगे सुधीवर।
स्वमन्तव्यामन्तव्यों की जहाँ तक नाद पहुँचाई।।
है स्पन्दित जिससे तरुणाई।।
विचारों के प्रबल हैं पुंज ये,
'सत्यार्थप्रकाश' भाष्य भूमिका,
विधि सस्कारों की रचकर, बढ़ाई शान और प्रतिभा।
सकल जग में दुन्दुभी बज रही,
चारों वेदों की शाश्वत ऋचाएँ,
स्व तन-धन भेंटकर सबने,
गुंजाई हैं सकल दिशाएँ।
तड़ित सम फैलकर यौवन की,
अब उठती है अंगड़ाई।।
है स्पन्दित जिससे तरुणाई।।

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत', नेमदार गंज (बिहार)

कृष्ण कुमार यादव

दृष्टि कोण

भारतीय संस्कृति में सद्भाव के सूत्र

साम्प्रदायिकता बनाम सामाजिक सद्भाव

विश्व के सबसे विशाल लोकतन्त्र के रूप में भारतीय धरा ने विभिन्न जातियों, धर्मों और भाषाओं की खूबसूरत सतरंगी माला को आत्मसात् किया हुआ है। भारत में एक अरब से ज्यादा लोग जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई एवं तमाम जातियाँ व जनजातियाँ शामिल हैं, उनकी जड़ों में सामाजिक-साम्प्रदायिक सद्भाव एक विशिष्ट रूप में मौजूद होकर सुजला, सुफला, शस्य श्यामला राष्ट्र के प्रति समर्पण दर्शाता है। सैकड़ों आक्रमणों, जाति-धर्म के अनेक झंझावतों, भाषा, बोली, त्यौहार, खान-पान व वेशभूषा में फर्क होने के बावजूद भी एक-दूसरे के साथ विभिन्न पर्वों में हम शरीक हुए हैं और भारतीय संस्कृति की अक्षुण्णता बरकरार है। यही हमारी अनूठी सामाजिक-साम्प्रदायिक सद्भाव की सबसे बड़ी विशेषता है।

भारत में प्राचीन काल में वर्णाश्रम व्यवस्था के तहत कर्मों के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र वर्गों की व्यवस्था की गई। परशुराम ब्राह्मण होकर भी कर्म से क्षत्रिय थे तो विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय होकर भी कर्म से ब्राह्मण थे। महाभारत कालीन विदुर दासी पुत्र थे पर कर्म के आधार पर उनकी योग्यता का सम्मान किया गया। कालान्तर में इस व्यवस्था के कर्म की बजाय जन्म आधारित बन जाने पर छुआछूत और अस्पृश्यता जैसी विभेदकारी भावना को बढ़ावा मिला। विभिन्न धर्मान्तरणों का एक बहुत बड़ा कारण अस्पृश्यता की भावना रही है। बौद्ध व जैन धर्मों ने इस व्यवस्था पर चोट करके ही अपनी स्वीकार्यता कायम की। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान इस तथ्य को समझा गया कि सामाजिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई मोल नहीं। तद्नुसार विभिन्न समाज सुधारकों ने इस ओर ध्यान दिया। महात्मा ज्योतिबा फूले ने निचली जाति की लड़कियों हेतु अनेक स्कूल खोले, तो गाँधी जी ने अस्पृश्य वर्ग को 'हरिजन' नामक देकर उनके उद्धार हेतु कार्य किया। इस सम्बन्ध में सबसे प्रभावशाली रूप में डॉ. अम्बेडकर ने दलितों हेतु संघर्ष किया और सुनिश्चित किया कि उन्हें समाज में बराबरी का स्थान दिलाने हेतु संविधान में विशिष्ट उपबंध किये जायें।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान और उसके पूर्व सामाजिक-साम्प्रदायिक सद्भाव भारतीय संस्कृति का एक गौरवशाली पक्ष रहा है। भक्तिकाल में जाति-धर्म से परे हिन्दू व मुस्लिम सन्त दोनों ने समान भाव से लोकप्रियता हासिल की। कबीर को एक जुलाहे ने पाला पर उनके गुरु राम उपासक रामानन्द थे। रानी कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेजकर सद्भावना की मिसाल कायम की। अकबर ने सुलहकुल की नीति अपनायी एवं हिन्दुओं से भी वैवाहिक रिश्ते जोड़े। कट्टर मुसलमान होने के बावजूद मुगल शासक औरंगजेब के शासन काल में सर्वाधिक हिन्दू अधिकारी थे। अनेक मुस्लिम शासकों ने हिन्दू मंदिरों के जीर्णोद्धार हेतु धन दिया। शाहजहाँ द्वारा निर्मित ताजमहल आज सिर्फ मुस्लिम स्थापत्य कला का ही प्रतीक नहीं बल्कि सभी धर्मों द्वारा इस प्रेम के प्रतीक को उतनी ही श्रद्धा से देखा जाता है।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जाति, धर्म, लिंग, भाषा से ऊपर उठकर लोगों ने देश को आजाद कराने हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। अन्तिम मुगलशासक बहादुरशाह जफर मुस्लिम होने के बावजूद माथे पर तिलक लगाकर और गले में जूनर यानी पवित्र धागा बाँधकर मन्दिर जाया करते थे, तो १८५७ में नाना साहब जैसे चित्पावन ब्राह्मण ने भी अपनी उद्घोषणा इस्लामी उक्तियों के साथ आरम्भ की। बेगम हजरत महल और खान बहादुर खान ने राम और कृष्ण के नाम पर लोगों से अपील की। १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिमों की प्रभावी भूमिका से कुपित अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम अलगाववाद की नीति अपनायी पर उन्हें उस रूप में सफलता नहीं मिली। यही कारण है कि वर्ष १९०५ में जब अंग्रेजों ने बंगाल-विभाजन द्वारा हिन्दू, मुस्लिम को पृथक् करने की सोची तो लोगों ने एक दूसरे को राखी बाँधकर एकता का इजहार किया और गंगा में डुबकियाँ लगाकर इस आंदोलन का विरोध आरम्भ किया। वकील अब्दुर्रसूल और हसरत मोहानी जैसे प्रगतिशील मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने इस आंदोलन में सक्रियता से भाग लिया। इसी प्रकार १९१९ में हिन्दू-मुस्लिम एकता प्रदर्शित करने के लिए मुसलमानों ने कट्टर आर्यसमाजी नेता स्वामी श्रद्धानन्द को दिल्ली की जामा मस्जिद के टिंबर से अपना उपदेश सुनाने हेतु आमंत्रित किया तो अमृतसर में

सिखों ने स्वर्ण मंदिर की चाबियाँ मुसलमान नेता डॉ. सैफुद्दीन किचलू को सौंप दीं। इसमें कोई शक नहीं कि अंग्रेज जाते-जाते भारत को दो टुकड़ों में बाँट गये पर धर्म के आधार पर उनका द्वि-राष्ट्र का सिद्धान्त सफल नहीं हुआ। पाकिस्तान ने अपने को एक मुस्लिम राष्ट्र के रूप में भले ही स्थापित कर लिया हो, पर आज भी भारत में पकिस्तान से ज्यादा मुसलमान बसते हैं। निश्चिततः सामाजिक एवं साम्प्रदायिक सद्भावना का इससे ज्वलन्त उदाहरण कोई नहीं हो सकता।

भारतीय संविधान के विभिन्न अनुच्छेद भी इस भावना को समाहित करते हैं। संविधान में कर्तव्यों की सूची में भी सुनिश्चित किया गया है कि- 'भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे एवं हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे व उसका परिरक्षण करे।

हर वस्तु के दो आयाम होते हैं। अगर विभिन्न जातियों, धर्मों आदि ने भारतीय संस्कृति को पल्लवित किया है तो समय-समय पर इसी विभिन्नता के कारण भारतीय संस्कृति को चोट भी पहुँची है। समाज के विभिन्न द्वेषी वर्गों ने इस विभिन्नता को नकारात्मक रूप में इस्तेमाल कर सदैव अपने हित में इस्तेमाल करना चाहा है। पर शिक्षा और जागरूकता के प्रसार के साथ ही इन नकारात्मक तत्वों का प्रभाव क्षीण होता गया है।

आज समग्र विश्व उदारीकरण, भूमण्डलीकरण और साइबर वर्ल्ड के कारण सिमटता जा रहा है। ऐसे में सामाजिक, साम्प्रदायिक विभेद को बढ़ाने वाले किसी तत्व को उचित ठहराना सम्भव नहीं। बचपन से ही एक दूसरे के धर्मग्रंथों और धर्मस्थानों के प्रति आदर का भाव पैदा करके अगली पीढ़ियों को इस विसंगति से दूर रखा जा सकता है। समाज में हमारे बीच ही तमाम ऐसे उदाहरण हैं जो सद्भाव की इस भावना को दृढ़ता प्रदान करते हैं। शेख सलीम चिश्ती और ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाहों पर जिस श्रद्धा से मुसलमान जाते हैं, उसी श्रद्धा से हिन्दू भी। कानपुर में स्थित शिव हनुमान संतोषी माता मन्दिर और एक मीनारी मस्जिद की दीवारें एक ही हैं तथा एक ही कुएँ से पुजारी और मौलवी दोनों पानी पीते हैं।

कानपुर देहात के मकनपुर अवस्थित सूफी हजरत सैयद बदीउद्दीन जिंदाशाह की मजार हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए समान रूप से आस्था का केन्द्र है। बीते करीब छह सदी से मुसलमान जहाँ हिजरी कैलेण्डर के अनुसार १७ जमीदुल अव्वल को उर्स, वहीं हिन्दू वसन्त पंचमी को बाबा की पुण्यतिथि मनाते हैं। बिहार के भागलपुर जिले के आमापुर गाँव में स्थित सूफी संत की दरगाह की देखभाल एक हिन्दू करता है तो आन्ध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम् जनपद के टुनी कस्बे में स्थित पायकराओपेटा के दुर्गा मन्दिर में एक मुस्लिम पुजारी है, जो संस्कृत में मंत्रों का उच्चारण कर सभी कर्मकाण्ड शास्त्रीय ढंग से सम्पन्न कराता है।

कर्मकाण्ड हेतु विख्यात् बनारस की डॉ. नाहिद आब्दी ने मुस्लिम धर्मानुयायी होने के बावजूद संस्कृत में मास्टर डिग्री ने लेने के बाद वेद जैसे कठिन विषय पर पी.एच.डी. की है। मिर्जा गालिब की 'मसनवी चिरागे दैर' का वे 'देवालयस्य दीपः' नाम से संस्कृत में अनुवाद कर चुकी हैं और रहीम की रचनाओं को संस्कृत में बिल्कुल अलग अन्दाज में पेश कर चुकी हैं। बनारस के ही महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ की छात्रा नाजनीन ने हनुमान चालीसा का उर्दू में अनुवाद करने के बाद अब रामचरित मानस को भी उर्दू में लिखना आरम्भ कर दिया है। नाजनीन का मानना है कि इतिहास ने उसे साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने हेतु यह कदम उठाने की प्रेरणा दी, जहाँ बादशाह अकबर ने रामायण व महाभारत का अनुवाद अरबी फारसी में कराया था। पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जिस श्रद्धा से कुरान पढ़ते थे उसी श्रद्धा से गीता भी पढ़ते थे। प्रख्यात् शहनाई वादक बिस्मिल्लाह खान ने बनारस में गंगा तट पर अवस्थित मंगला गौरी मंदिर से शहनाई वादन की शुरूआत की, वे मुहर्रम के गमीं अवसर पर भी उतनी ही शिद्दत से शहनाई बजाते थे। निश्चिततः सामाजिक व साम्प्रदायिक सद्भाव के इससे अच्छे उदाहरण नहीं हो सकते। जाति-धर्म की सीमाओं से परे हम सिर्फ एक मानव हैं, जब तक यह सोच रहेगी तब तक सामाजिक साम्प्रदायिक

सद्भाव की भावना कायम रहेगी। मशहूर शायर मोहसिन काकोरवी ने इस सद्भाव की भावना को शब्दों में यूँ सँजोया है-

गर तेरा इज्न हो तो ब्राह्मण करे वजू,
गंगा नहाए शेख, बेकार जुस्तजू।

निदेशक डाक सेवाएँ
राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र, जोधपुर- ३४२००१
चलभाष- ०९४१३६६६५९९

श्रीमान् केशवलाल जी पुत्र श्री लालदास जी निवासी जयपुर का ६८ वर्ष की आयु में २६ नवम्बर २०१५ को निधन हो गया। श्री केशव लाल जी आजन्म आर्यसमाज से सक्रिय रूप से जुड़े रहे तथा सिरोही आर्यसमाज के प्रधान भी रहे। राज. पुलिस की सेवा में रहते हुए उन्होंने विभाग की तथाकथित बुराईयों से अपने को दूर रखते हुए अपने परिवार एवं मित्रों को वैदिक संस्कार दिए। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- सत्यप्रकाश शर्मा

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई

स्वास्थ्य

जलने पर घरेलू उपचार

आज के आर्थिक युग में हर समाज बड़ी कठिनाई से अपना जीवन व्यतीत कर रहा है।

ऐसे समय में अचानक व्यक्ति जल गया तो एक दम दौड़कर अस्पताल जाना पड़ता है, औषधियों में भी बहुत पैसा खर्च हो जाता है और समय भी खर्च होता है।

यदि हम घरेलू उपचार जानते हैं तो स्वयं ही उपचार कर सकते हैं। पाठकों से मेरा अनुरोध है कि आप नीचे लिखे उपायों से पूरे विश्वास के साथ उपचार कर पैसा और समय बचावें।

१. जले स्थान पर नमक को पानी में घोलकर लगावें।

२. हल्दी को पानी में मिलाकर लेप करें।

३. भैंस के गोबर को जले स्थान पर रखें।

४. ब्राह्मी को पानी के साथ पीस कर लगावें।

५. सूखी मेहन्दी के पाउडर को घर में मिलाकर लगावें।

६. मिट्टी को छानकर पानी के साथ अच्छी तरह ओट कर गून्दसे भली प्रकार गून्द कर जले स्थान पर रखें। एक घंटे के पश्चात् नई मिट्टी लेकर रखते रहें।

यदि अधिक जल गया हो तो राल पंसारियों के पास मिलती है उसको लेकर खोपरे के तेल और पानी को मिलाकर ठंडाई की तरह घोट कर जाड़ा मल्हम मिलाकर लगाते रहें यह राम बाण औषधि है।

ग्वार पाठे का रस भी लगावें

१. पानवालों के पास बर्तन में गला चूना रहता है उसका पानी लेकर खोपरे का तेल मिलाकर लगायें।

२. हंसराज (हरी पत्तियाँ मेहन्दी की तरह छोटी होती हैं ये गीले मिट्टी के स्थानों पर पायी जाती हैं) पानी के साथ पीसकर घी में तलकर मल्हम बनाकर लगावें।

३. कत्था और बड़ी इलायची के दाणों को बारीक पीसकर कपड़े से छान लें इसमें भीमसेनी कपूर को कूटकर मिलावें फिर खोपरे के तेल के साथ घोंट कर मल्हम बनाकर लगावें यह भी आश्चर्यजनक लाभ देने वाला अचूक उपचार है।

ओ३म् प्रकाश देवपुरा विशारद, पूर्व सदस्य,
जोधपुर नगर प्राकृतिक चिकित्सा परिषद,जोधपुर
द्वारा अनुराग स्पोर्टस जल चक्की रोड, कांकरोली (राज.)

यमान् सेवेत सततम्

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

राजर्षि मनु ने मनुस्मृति के चतुर्थ अध्याय में द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के लिए उपदेश किया है कि आयु का प्रथम एक चौथाई भाग गुरु के समीप बिता कर आयु के द्वितीय भाग में विवाह करके पत्नी के साथ गृह में निवास करे।

चतुर्थमायुषो भागमुषित्वाऽऽद्यं गुरौ द्विजः।
द्वितीयमायुषो भागं कृतदारो गृहे वसेत्॥ - मनु.४/१

घर में रहता हुआ जीविकोपार्जन कैसे करे इसका भी उपदेश करते हुए कहा है कि-

अद्रोहेणैव भूतानामल्पद्रोहेण वा पुनः।
या वृत्तिस्तां समास्थाय विप्रो जीवेदनापदि॥ - मनु.४/२

आपत्ति रहित काल में प्राणियों को पीड़ा दिए बिना अथवा अल्प पीड़ा हो जिस प्रकार वैसी वृत्ति अपनाकर जीवन निर्वाह करे। केवल जीवन यात्रा की सिद्धि के लिए अपने वर्ण के नियत अनिन्दित कर्मों को करे और शरीर को क्लेश पहुँचाए बिना ही धन का संचय करे।

यात्रामात्र प्रसिद्ध्यर्थं स्वैः कर्मभिरगर्हितैः।
अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत धनसंचयम्। - मनु.४/३

धन प्राप्ति के लिए शास्त्र विरुद्ध आचरण, कुटिलता, क्रूरता कभी भी न करे, शुद्ध जीविकोपार्जन करे। ४-११

चाहे कितना ही दुःख पड़े तो भी अधर्म से कभी धन संचय न करे। ४-१५

इसी क्रम में वे एक और महत्वपूर्ण बात कहते हैं-

इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु न प्रसज्येत कामतः।
अतिप्रसक्तिं चैतेषां मनसा संनिवर्तयेत्॥ - मनु.४/१६

इन्द्रियों के विषयों में काम से कभी न फंसे और विषयों की अत्यन्त आसक्ति को मन से अच्छे प्रकार दूर करता रहे।

तथा च वेदोदितं स्वकं कर्म नित्यं कुर्यादतन्द्रितः।
तद्धि कुर्वन् यथाशक्ति प्राप्नोति परमां गतिम्॥ - मनु.४/१४

वेद विहित स्वकर्म को आलस्य रहित होकर नित्य करता रहे, उसी को यथाशक्ति करते हुए द्विज परम गति को प्राप्त करता है। इसी चौथे अध्याय में उनका एक श्लोक है-

यमान्सेवेत सततं न नित्यं इ नियमान्बुधः।
यमान्पतत्यकुर्वाणो नियमान्केवलान्भजन्॥ - मनु.४/२०४

अर्थात् यमों का नित्य निरन्तर सेवन ज्ञानीजन को करना चाहिए केवल नियमों का नहीं। यमों का सेवन न करता हुआ केवल नियमों का सेवन करने से पतित हो जाता है।

इसी श्लोक को महर्षि दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में तृतीय समुल्लास के अन्दर पठन-पाठन के क्रम में अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए उद्धृत किया है। यहाँ यम नियमों की परिभाषा देते हुए वे लिखते हैं- 'यमों के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करे किन्तु इन दोनों का सेवन किया करे। जो यमों के सेवन छोड़कर केवल इन नियमों का सेवन करता है वह उन्नति को प्राप्त नहीं होता किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है।'

यद्यपि मनु ने यम नियमों की परिभाषा नहीं लिखी परन्तु इस अध्याय में जो कुछ कहा गया है वह यम नियमों का पालन ही है। हमने जो थोड़ा सा अंश उद्धृत किया है उसको ध्यान से पढ़ने पर यह बात समझ में आ जायेगी। निश्चित रूप से मनु जिन ऋषियों को उपदेश कर रहे थे वे यम नियमों से सुपरिचित थे। अतः उन्होंने इन्हें परिभाषित नहीं किया।

यम, नियमों की परिभाषा योग दर्शन में उपलब्ध है यथा-

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापिरग्रहा यमाः। तथा
शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः॥

यहाँ विचारणीय है कि यमों को छोड़कर केवल नियमों के पालन से पतन क्या होगा?

यमों में सर्वप्रथम अहिंसा है और यही सर्वप्रमुख भी है। महर्षि व्यास कहते हैं-

तत्राहिंसा सर्वथ, सर्वदा सर्व भूतानामनभि द्रोहः।
उत्तरे च यम नियमा स्तन्मूलास्तहिसशिपरतयैव तत्प्रतिपानाय प्रतिपाद्यन्मत। यद्‌वदात रूप करणा यैवो पादीयन्ते।

- योगदर्शन २-३० पर व्यास भाष्य।

अर्थात् उन यमों में अहिंसा सब प्रकार से, सब काल में, सब प्राणियों में मन से भी द्रोह न करने को कहते हैं। शेष अगले चार यम और सभी नियम उसी अहिंसा के ही मूल हैं। उसी की सिद्धि, उसी के प्रतिपादन के लिए कहे गए हैं। इनके

द्वारा अहिंसा का ही रूप निर्मल करके उसे ही निखारा जाता है। मनु कहते हैं कि अहिंसा के बिना परम पद या मोक्ष सिद्ध नहीं होता।

यथोक्त -अहिंसयेन्द्रियासङ्गैर्वैदिकैश्चैव कर्मभिः।
तपसश्चरणैश्चोग्रैः साधयन्तीह तत्पदम्।। - मनु.६/७५

अर्थात् अहिंसा के द्वारा जो इन्द्रियों के विषयों के त्याग, वैदिक कर्मों और उग्रतपश्चरण के द्वारा ही विद्वान् परम पद मोक्ष को सिद्ध करते हैं। इसीलिए मनु ने पठन-पाठन प्रवचन उपदेश सभी अहिंसा पालन के साथ करने को कहा है-

अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्। - मनु.२/१५६

अन्यत्र कहा है-

अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते। - मनु.६/६०

अहिंसा के बिना सद्गति संभव नहीं है और शेष यमों अर्थात् सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के पालन बिना अहिंसा सिद्ध नहीं हो सकती अतः यमों का पालन अनिवार्य है।

महाराज भोज ने कहा है-

तत्र प्राण वियोगयोजन व्यापारो हिंसा।
साच सर्वानऽर्थ हेतुः। - योग दर्शन (भोजवृत्ति)

अर्थात् शरीर से प्राणों को पृथक् करने के प्रयोजन से किया जाने वाला कार्य हिंसा है और वह सब अनर्थों का कारण है। अतः अहिंसा पालन के बिना अनर्थों से छुटकारा संभव नहीं है। यमों से विपरीत हिंसादि भावों को योग मार्ग में वितर्क कहा गया है। ये योगमार्ग में बाधक और अत्यन्त अज्ञान और अत्यन्त दुःख को देने वाले हैं। अतः श्रद्धापूर्वक निरन्तर यमों के सेवन के बिना दुःखों से छुटकारा संभव नहीं है। यम एक प्रकार के निषेध या परहेज हैं जिनमें न करने का विधान है यथा हिंसा नहीं करना, असत्य नहीं बोलना, चोरी नहीं करना, वीर्यनाश नहीं करना और भोग साधनों को स्वीकार नहीं करना है। शास्त्र में पाप, अधर्म और अहित को ही न करने का उपदेश होता है। उक्त हिंसादि कार्य पाप, अधर्म और अहितकर हैं। अतः वे योग का फल प्राप्त नहीं करा सकते, लोक में सुख शांति नहीं दिला सकते, परलोक नहीं सँवार सकते, आत्मशुद्धि और आत्मशांति की प्राप्ति नहीं करा सकते।

यमों को छोड़कर केवल नियमों का सेवन एक प्रकार का पाखण्ड और दिखावा मात्र ही होगा।

स्वयं मनु ने ही ऐसा कहा है। देखें-

वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च।
न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्। - मनु.२/६७

अर्थात् जो दुष्टाचारी अजितेन्द्रिय पुरुष हैं उसके वेद, त्याग, यज्ञ नियम और तप तथा अन्य अच्छे कार्य कभी सिद्धि को प्राप्त नहीं होते। स. प्र. तृतीय समुल्लास पृ. ४ तथा समु. १० पृ. २५८

इसीलिए कहा गया कि **'यमान् सेवेत सततम्।'** इति

- महर्षि दयानन्द आश्रम, सीताबाड़ी, पोस्ट-केलवाड़ा
जिला बारां (राज.) ३२५२१६

श्री लक्ष्मी स्वरूप जी जारी एवं जारी माता जी का निधन

उदयपुर के आर्य जगत् के सबसे वरिष्ठ सदस्य श्री जारी जी, जिनके जीवन में मानवता के गुण और आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति निष्ठा के भाव कूट-कूट कर भरे हुए थे का निधन ९६ वर्ष की आयु में दिनांक ३ जनवरी हो गया। श्री जारी जी का निधन हम सबकी अपूरणीय क्षति है। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके दिव्य गुणों को अपने जीवन में धारण करें और माँ आर्य समाज की सेवा सतत् रूप से करते रहें। ईश्वर की व्यवस्था कुछ ऐसी बनी कि श्री लक्ष्मीस्वरूप जारी की धर्मपत्नी माता प्रकाशवती जारी का निधन भी ९ दिन के अन्तराल पर दिनांक १२ जनवरी २०१६ को हो गया। माता जी गत तीन माह से अस्वस्थ थीं परन्तु उससे पूर्व नियमित प्रतिदिन आर्य समाज में जाकर यज्ञ करना उनकी दैनिन्दिन जीवनचर्या का अमिट अंग था। अपने सम्पूर्ण जीवन इस दम्पत्ति ने सर्वत्र प्रेम, स्नेह और आत्मीयता का वितरण ही किया। न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार इस अवसर पर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दोनों दिवंगत आत्माओं को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें। - अशोक आर्य

श्रीमती उषा मित्तल का निधन

न्यास से अभिन्न रूप से जुड़े तथा न्यास की समस्त गतिविधियों में तन-मन-धन से सभी सदस्यों द्वारा सदैव सहभागी मित्तल परिवार के साथ-साथ सम्पूर्ण आर्य जगत् में दुःख की लहर तब व्याप्त हो गई जब अल्पायु में ही दिनांक ३ जनवरी २०१६ को अचानक इस सहृदय परिवार की एक सदस्या श्रीमती उषा मित्तल (धर्मपत्नी श्री महेश मित्तल) के आकस्मिक निधन का समाचार ज्ञात हुआ। विधाता की व्यवस्था का क्या अनुमान लगाया जा सकता है। परिवार में उषा मित्तल की सुपुत्री के विवाह की तैयारियाँ चल रही थीं उसी के मध्य यह वज्राघात हो गया। परन्तु सम्पूर्ण मित्तल परिवार ने वियोग की इस भयंकर पीड़ा को बड़े ही धैर्य के साथ सहन किया। विशेष बात यह भी रही कि श्मशान में दाह संस्कार के समय परिवार की महिला सदस्यों ने भी उपस्थित होकर घृत व सामग्री से आहुतियाँ प्रदान कीं।

न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार इस अवसर पर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें। - अशोक आर्य

यजन से जश्न तक

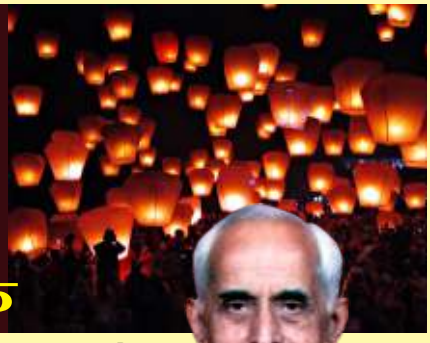

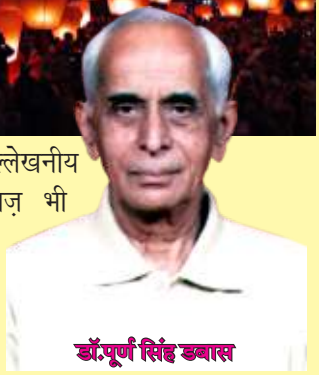

डॉ.पूर्ण सिंह डबास

सगोत्रीय होने के कारण भारतीय आर्यों तथा ईरानियों के प्राचीन धर्म में बहुत समानता है। ईरानी देवताओं के दो मुख्य वर्ग- दैव तथा अहुर हैं। यद्यपि ईरानी दैव (= दिव्य, स्वर्गिक; वैदिक देव तथा लैटिन देउस) शब्द का विकास, भारतीय भाषाओं में समान रूप से प्राप्त ईश्वर बोधक शब्द देव से हुआ है किंतु अनेक ईरानियों में तथा जोरोष्ट्रवादियों में दैव को देव न मानकर राक्षस या दैत्य माना गया है। दैवों के विपरीत देवता वहाँ अहुर (=स्वामी; वैदिक असुर) कहलाते थे जो उच्च और परम सत्तात्मक देवता थे। बग़[1] (= वैदिक भग 'जो वितरण या प्रदान करता है') तथा यज़त (= जिसकी उपासना की जाए) आदि अन्य देवताओं की तुलना में अहुरों की महत्ता एवं सत्ता बहुत प्रबल थी। इन देवगणों में अहुर मज़्दा (सं. असुर-महत्) सर्वोच्च देवता था जिसका सम्बन्ध मुख्यतः 'ब्राह्माण्डीय एवं सामाजिक व्यवस्था' के सिद्धान्तों से था। अहुर मज़्दा का निकट सहयोगी देवता मिथ्र (= वैदिक मित्र) नामक अहुर था जो 'प्रतिश्रुतियों' या 'अनुबंधों' का अधिष्ठाता माना जाता था। इसी प्रकार यज़्न (अवेस्ता यस्न; वैदिक यज्ञ/यजन) नाम से एक धार्मिक कृत्य किया जाता था जिसमें अग्नि तथा पवित्र पेय हौम (अवेस्ता हओम; वैदिक सोम) की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। यज़्न में जो प्रमुख अधिकारी होता था वह ज़ौतर (= वैदिक होतृ) कहलाता था।

जुरथुष्त्रवादियों (जोरोष्ट्रियन्स) की प्राचीन धर्म-पुस्तक अवेस्ता[2] में धर्म का मूल तत्व जिन मंत्रों में कहा गया है उनका नाम गाथा है। गाथाओं का विषय यस्न (= संस्कृत यज्ञ/यजन) है जिसमें हओम (सं. सोम) तैयार करने की रीति और हओम यज्ञ का विधान है।

इस प्रकार भारत तथा प्राचीन ईरान में देवताओं तथा यज्ञ सम्बन्धी शब्दावली तथा मान्यताओं में पर्याप्त समानता है। वस्तुतः यज्ञ जितना प्राचीन तथा अविच्छिन्न रूप से चला आने वाला कोई अन्य अनुष्ठान किसी भी धर्म में नहीं है। वैदिक (हिन्दू) धर्मावलम्बियों तथा ज़ोरोष्ट्रवादियों में यज्ञ की परम्परा आज तक निरन्तर रूप से चली आ रही है।

प्रसंगवश यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि फारसी का नमाज़ भी संस्कृत नमस् (नमस्कार) का रूपान्तरण है।

आइए, अब यज्ञ या यजन शब्द पर विचार करें। इनके मूल में संस्कृत की यज् धातु है जिसका अर्थ है- 'अर्चना, आराधना, पूजा या उपासना करना; (हवि द्रव्य या आहुति देकर) उपासना या सम्मान करना; अर्पित करना; तथा पवित्र या संस्कारित करना।' यज् धातु से संस्कृत में अनेक शब्द बनते हैं। प्रस्तुत विषय के स्पष्टीकरण के लिए उनमें से कुछ शब्द नीचे दिये जा रहे हैं:

यजत= पवित्र, पूजनीय, अर्चनीय; उदात्त; यज्ञ करने वाला, याजिक।

यजथ= अर्चना, पूजा।

यजन= पूजन, अर्चन।

यजमान= पूजन, आराधन; यज्ञ का संस्थापक; ब्राह्मण से यज्ञ-कर्म करवाने वाला तथा उसे दक्षिणा या उपहार देने वाला; यज्ञ का खर्च उठाने वाला।

यजिन= यज्ञ करने वाला; पूजक।

यजिष्ठ= अत्यधिक यज्ञ करने वाला; सर्वोत्कृष्ट यज्ञकर्ता।

याज/याज़्/याजक= यज्ञ करने वाला।

याग= यज्ञ।

याजन= अन्यों के लिए यज्ञ करना।

याजमान= यज्ञानुष्ठान का वह भाग जो इसके संस्थापक

द्वारा सम्पन्न किया जाए।

याजयितृ= यज्ञ सम्पन्न कराने वाला, यज्ञ का ब्रह्मा।

यष्टव्य्= पूजनीय, आराध्य।

इष्ट= ('यज्' धातु से ही निर्मित भूतकाल का एक रूप) पूजित, अर्चित।

इष्टस्/इष्टम्= यज्ञ।

इसके अतिरिक्त यज् धातु से ही इज्यात्, इयाज, इष्टवा, यष्टा, यष्टुम, अयष्ट, यक्षत, यक्षति, यक्षि तथा यक्षव आदि अनेक व्याकरणिक रूप बनते हैं।

यज् परिवार के ये शब्द न केवल संस्कृत में बल्कि यूनानी, ज़ेंद (अवेस्ता) तथा फारसी आदि भाषाओं में भी मिलते हैं। यूनानी भाषा के अग्नोस, ॲगोस तथा ॲज़ोमइ आदि रूप सं. यज् से ही संबद्ध हैं। अवेस्ता के यज़ और यज़त संस्कृत के यज् और यजत के समान ही हैं। फारसी में तो इस प्रकार के शब्दों की संख्या काफी है। अवेस्ता की तरह यहाँ भी सं. यज् के ज का ज़ में रूपान्तरण तो होता ही है, इसके अतिरिक्त वह स का रूप भी धारण कर लेता है। उसी प्रकार जैसे संस्कृत में भी यज् से निर्मित यष्टव्य, यष्टवे, यष्टा तथा इष्टवा आदि 'षकार' युक्तरूप मिलते हैं। सं. यजत (= पवित्र, पूजनीय) जो अवेस्ता में यज़त बन गया था फारसी में यज़्द बन गया और 'पूजनीय' से 'परम् पूजनीय' अर्थात् ईश्वर का अर्थ देने लगा। यज़्द से बना यज़्दान 'ईश्वर' के अतिरिक्त 'सर्वशक्तिमान' तथा 'अहिर्मन् के विपरीत वह शक्ति जो अच्छाई का आधारभूत कारण है' का बोधक भी हो गया। इसी प्रकार फारसी यज़्दान-बख्श का अर्थ है 'ईश्वरीय देन' और यज़्द परस्त या यज़्दान परस्त[३] का अर्थ है 'ईश्वर का उपासक'। यज़्द से यज़्दानी विशेषण बना और अर्थ हुआ- 'ईश्वरीय या दिव्य'। फारसी में यज़िश रूप भी मिलता है, जैसे कि यज़िश-ख़्वान,[४] जिसका अर्थ है- मग जनों का पुरोहित और मध्यस्थ। इसी क्रम में यज़िश्नी 'दिव्य' या 'दैवी' का अर्थ देता है और यज़िशगाह 'प्रार्थनागृह' या 'आराधना-स्थल' का बोधक है।

श वाले रूपों में फारसी तथा अवेस्ता यश्त् (= अवेस्ता के एक अध्याय का नाम), यश्तन (= ज़ेंद और पाज़ेंद में - 'फुसफुसाहट भरी आवाज में प्रार्थना करना, जैसे कि 'अग्नि पूजक' भोजन के समय करते हैं; याचना करना; यज्ञ करना; अनुष्ठान करना) तथा फारसी यश्तः करदन (= प्रार्थना करना) आदि समाविष्ट हैं।

निष्कर्षतः, जिस प्रकार यूनानी अग्नोस, अवेस्ता यज़, यज़त, यस्न, यश्त; फारसी यज़्द, यज़्दान तथा यज़िश आदि संस्कृत यज् या यजन के रूपान्तरण हैं उसी प्रकार फारसी ज़श्न भी संस्कृत का रूपान्तरण है। यह सीधे-सीधे अवेस्ता यस्न (< सं. यजन) से विकसित है।

जैसी कि परम्परा थी, यज्ञ या यजन के सम्पन्न होने पर, यज्ञ कराने वाले या होतृ को यजमान की ओर से दक्षिणा, दान तथा उपहार आदि दिये जाते थे। साथ ही यज्ञ की समाप्ति पर, उपस्थित जनों को प्रसाद तो वितरित किया ही जाता था प्रायः भोजन आदि भी कराया जाता था। इस प्रकार यज्ञ के निर्विध्न सम्पन्न हो जाने की प्रसन्नता, दान, उपहार तथा प्रसाद आदि के वितरण के कारण, वातावरण उल्लासपूर्ण बन जाता था। संस्कृत यजन और अवेस्ता यस्न से विकसित फारसी ज़श्न में यही हर्षोल्लास का अर्थ प्रमुख हो गया तथा यज्ञ या देव-पूजन का मूलार्थ लुप्त हो गया। फारसी में प्रचलित ज़श्न के अर्थों (पर्व, उत्सव; सामाजिक मनोरजन; उत्साह सम्बन्धी आयोजन; समारोह या औपचारिक प्रीति भोज) के आधार पर तो एक सीमा तक यह कहा जा सकता है कि फारसी ज़श्न में तो संस्कृत यजन की गंभीरता थोड़ी-बहुत बची हुई थी लेकिन हिन्दी-उर्दू तक आते-आते वह पूरी तरह समाप्त हो गई और इसके अर्थ- 'आनन्दोत्सव, आयोजन की मौज-मस्ती, आमोद-प्रमोद तथा नाच-गान से होते हुए गुलछर्रे[५] उड़ाने' तक पहुँच गए। कहाँ यजन जैसे धार्मिक अनुष्ठान की पवित्रता और कहाँ ज़श्न का हो-हल्ला।

१. 'ए पर्सियन इंग्लिश डिक्शनरी' में फारसी बग़ को देवप्रतिमा और देवता का बोधक बताते हुए इसका ज़ेंद रूप बग़ो (bagho) भी दिया है। मोनियर विलियम्स ने 'ए संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी' में भग का अर्थ देते हुए इसके साथ ज़ेंद (अवेस्ता) बग़, पुरानी फारसी बग, यूनानी बगइयोस, स्लाव बोगुं, बोगतुं तथा लिथुआनियन बगोतस के साथ तुलनीय बताया है। वस्तुतः ये सब संस्कृत भग या भगवत आदि के रूपान्तरण हैं। क्योंकि, इन सभी भाषाओं में संस्कृत की महाप्राण ध्वनि भ नहीं है इसलिए यह वहाँ अल्पप्राण ब में परिवर्तित हो जाती है। उक्त फारसी-कोश में प्रसिद्ध नगर बग़दाद की व्युत्पत्ति फारसी बग़-दाद से देते हुए इसका अर्थ 'God given'(= ईश्वर प्रदत्त) बताया है। स्पष्टतः ही यह संस्कृत भग-दत्त या भग-दाद का रूपान्तरण है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि संस्कृत की दा (=देना) धातु से जो अनेक रूप बनते हैं उनमें से दात, दत्त (= दिया हुआ) तथा दाद (= उपहार, दिया हुआ) आदि के रूपान्तरणों से ही फारसी के दादन (= देना),

दाद (= उपहार), दाद: (= दिया हुआ) तथा दादनी (= दिलवाने के योग्य; उपहार) आदि शब्द बने हैं। फारसी में दादर, दादिर (हिन्दी दाता; सं. दातृ) का अर्थ 'ईश्वर' है और दाद-ख़ुदा का अर्थ है- ईश्वरीय देन या उपहार। यही दाद शब्द बग़दाद जैसे स्थान-नामों तथा मियाँदाद जैसे व्यक्ति नामों में है। इतना ही नहीं सं. दा (= देना) धातु के दत्त/दात रूपों के आधार पर अंग्रेजी का डेट (date = दिया हुआ या निर्दिष्ट समय-बिन्दु) शब्द बना है। इसी दा के दान/दानम् रूपों से लैटिन दोनम (donum= दान) तथा अंग्रेजी के डोनेट (donate) एवं डोनेशन (donation) आदि अनेक शब्द विकसित हुए हैं।

२. अवेस्ता, जोरोष्ट्रियन लोगों के धर्मग्रन्थ का नाम भी है और उसकी भाषा का भी। आज कल भाषा के लिए 'अवेस्ता' के स्थान पर ज़ेंद शब्द का प्रयोग होता है। हालांकि यह प्रयोग गलत है लेकिन चल पड़ा है।

३. यज़्द, यज़्दान तथा यज़्दानी आदि में ('ए पर्सियन इंग्लिश डिक्शनरी' के अनुसार) द या दान मूलत: फारसी दानिशतन् का आज्ञार्थक रूप है और समस्त पदों में यह 'जानकार' या 'अभिज्ञ' का अर्थ देता है। इस प्रकार यज़्दान का मूलार्थ है- 'यज्ञ कर्म का ज्ञाता' या 'नियामक'।

४. ख़्वान का अर्थ फारसी में- पाठ करने वाला, (स्तुति) गायक तथा आह्वान करने वाला है। इस प्रकार यजिश ख़्वान का मूलार्थ यज्ञ में 'मंत्रोच्चार करने वाला' या 'देवों का आह्वान करने वाला' रहा होगा।

५. उर्दू-कोश फ़ीरोज-उल्-लुग़ात में 'ज़श्न मनाना' का अर्थ है- खुशी मनाना, नाच-रंग व ऐशो नशात में मशगूल होना, गुलछर्रे उड़ाना।

एम- ९३, साकेत, नई दिल्ली- ११००१७
चलभाष- ०९८१८२११७७१

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

•**सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य	भंवरलाल गर्ग	डॉ.अमृत लाल तापड़िया
मंत्री-न्यास	कार्यालय मंत्री	उपमंत्री-न्यास

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001
अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

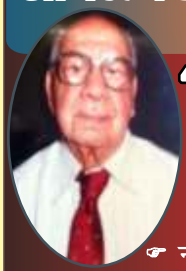

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

☛ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
☛ जनवरी १६ से दिसम्बर १६ तक सत्यार्थ सौरभ के सभी १२ अंकों में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश पहेलियों को हल करें।
☛ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
☛ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
☛ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
☛ ऊपरलिखित उपबन्धों के अधीन पूरे १२ महीने शुद्ध हल भेजने वालों में से एक विजेता का चयन लॉटरी के द्वारा होगा।
☛ विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
☛ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
☛ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

यजुर्वेद में पशु पालन

– शिवनारायण उपाध्याय

मानव जीवन को विकास के मार्ग पर चलने पर सबसे अधिक सहायता पशुओं से ही प्राप्त होती रही है। गाय, भैंस, भेड़, बकरी तथा ऊँटनी से उसे दूध प्राप्त होता है जिसे आदर्श भोजन ही नही वरन् पूर्ण भोजन माना जाता है। राह में चलते समय पैरों को काँटों एवं धूप से बचाने के लिए जिन जूतों का वह उपयोग करता है वे भी मृत पशुओं की खाल से ही निर्मित होते हैं। घोड़ा, ऊँट, गदहा, बैल और हाथी सवारी तथा माल ढोने के कार्य में उपयोगी होते हैं। बैल, भैंसा और ऊँट कृषि कार्य में सहायक होते हैं। कुत्ते घर की रक्षा करने में सहायक होते हैं। इसलिए मानव जाति अपने उद्‌भव के काल से ही पशुपालन को महत्व देती रही है। मानव जाति की प्रथम साहित्यिक रचना वेद में भी इसलिए पालतू पशुओं के विषय में बताया गया है। वैदिक ऋषियों ने इन पशुओं के गुण दोषों का वर्णन करते हुए उनके स्वभाव का भी वर्णन किया है। यजुर्वेद में बहुत विस्तार के साथ इस विषय पर चर्चा हुई है। हम पाठकों के लिए यजुर्वेद से ही इस विषय में संक्षेप में कुछ बताना पसन्द करेंगे।

घृतेनाक्तौ पशूँस्त्रायेथाᳬ रेवति यजमाने प्रियं धाऽआविश।
उरोरन्तरिक्षात्सजूर्देवेन वातेनास्य हविषस्त्मना यज समस्य तन्वा भव। वर्षो वर्षीयसी यज्ञे यज्ञपतिं धाः स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।
– यजुर्वेद ६/११

भावार्थ– यज्ञ के लिए घृत आदि पदार्थ चाहने वाले मनुष्यों को गाय आदि पशु पालने चाहिए। घृतादि अच्छे-अच्छे पदार्थों से अग्निहोत्र से लेकर उत्तम यज्ञों से जल और पवन की शुद्धि कर सब प्राणियों को सुख देना चाहिए।

वि मुच्यध्वमघ्न्या देवयानाऽअगन्म तमसस्पारमस्य।
ज्योतिरापाम।
– यजुर्वेद १२/७३

भावार्थ– इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। मनुष्यों को चाहिए कि गौ आदि पशुओं को कभी न मारे, न मरवाये तथा न किसी को मारने दे। जैसे सूर्य के उदय से रात्रि निवृत्त होती है वैसे वैद्यक शास्त्र की रीति से पथ्य अन्नादि पदार्थों का सेवन कर रोगों से बचो।

फिर त्रयोदश अध्याय मंत्र ४७ में कहा गया है कि कोई भी मनुष्य सबके उपकार करने वाले पशुओं को कभी न मारे किन्तु इनकी अच्छी प्रकार रक्षा करे और इनसे उपकार लेकर सब मनुष्यों को आनन्द प्रदान करे।

अगले मंत्र में इसी मन्तव्य पर बल देते हुए पुनः कहा गया है–

मनुष्यों को उचित है कि एक खुर वाले घोड़े आदि पशुओं और उपकारक वन के पशुओं को भी कभी न मारे जिनके मारने से जगत् की हानि और न मारने से सबका उपकार होता है उनका सदैव पालन पोषण करे और जो हानिकारक पशु हों उनको मारे।

जिन पशुओं का उपयोग कृषि कार्यों में होता है उनके विषय में यजुर्वेद अध्याय १३ मंत्र ४६ में कहा गया है–

हे राजपुरुषों! तुम लोगों को चाहिए कि जिन बैल आदि पशुओं के प्रभाव से खेती आदि काम, जिन गौ आदि से दूध, घी आदि उत्तम पदार्थ प्राप्त होते हैं, जिनके दूध आदि से प्रजा की रक्षा होती है उनको कभी मत मारो और जो जन इन उपकारक पशुओं को मारे उनको राजादि न्यायाधीश कठोर दण्ड देवें। जो जंगल में रहने वाले नील गाय आदि प्रजा की हानि करें वे मारने योग्य हैं। अगले मंत्र में कहा गया है–

जिन भेड़ आदि के रोम और त्वचा मनुष्यों को सुख देते हैं उनको जो दुष्टजन मारना चाहें उनको संसार के लिए दुःखदायी समझो और उनको अच्छी प्रकार दण्ड दो। अगले मंत्र में बकरे और मोर को मारने से रोका गया है।

त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः।
रक्षा तोकमुत त्मना।
– यजुर्वेद १३/५२

पदार्थ- हे (पविष्ठ) अत्यन्त युवा। (त्वम्) तू रक्षा किये हुए इन पशुओं से (दाशुषः) सुख दाता (नृत्) धर्म रक्षक मनुष्यों की (पाहि) रक्षा कर। इन (गिरः) सत्य वाणियों की (श्रृणुधी) सुन और (त्मना) अपने आत्मा से मनुष्य (उत्) और पशुओं के (लोकम्) बच्चों की (रक्ष) रक्षाकर।

भावार्थ- जो मनुष्य मनुष्यादि प्राणियों के रक्षक पशुओं को बढ़ाते हैं और कृपामय उपदेशों को सुनते सुनाते हैं वे अन्त में सुख को प्राप्त होते हैं।

पशु पालन से अपनी व दूसरों की भी पालना होती है।

यजुर्वेद अध्याय २० मंत्र ८१ का भावार्थ है- गाय, घोडा, हाथी आदि पालना किये पशुओं से अपनी और दूसरे की, मनुष्यों की, पालना करनी चाहिए।

यजुर्वेद अध्याय २९ मंत्र १६ में घोड़े के पैरों में लोहे की नाल तथा लगाम लगाने का वर्णन हुआ है।

यजुर्वेद अध्याय २१ मंत्र संख्या ४६ में घोड़े को प्रशिक्षित करने को तथा मंत्र संख्या ४४ में हाथी, घोड़ा, बैल आदि को अच्छी शिक्षा देने को कहा गया है।

चौवीसवाँ अध्याय तो नाना प्रकार के पशु-पक्षियों के वर्णन से ही भरा हुआ है। इसमें पशु-पक्षियों के स्वभाव का गहन अध्ययन कर उसी प्रकार के स्वभाव वाले देवताओं के साथ उन्हें रखा गया है।

उक्ताः सञ्चराऽएताः शुनासीरीयां श्वेता वायव्याः श्वेताः सौर्याः।

- यजुर्वेद २४/१९

भावार्थ- जो जिस पशु का देवता कहा गया है उससे उस पशु का गुण ग्रहण करना चाहिए। जैसे चन्द्रमा के समान जो पशु है उनका वर्णन यजु. २४.३२ में हुआ है। इनमें कुलुंग नामक पशु, बनेला बकरा, न्योला, कक्कर मृग सामान्य सियार, गोरा हरिण आदि सम्मिलित हैं।

यजुर्वेद अध्याय २४ मन्त्र २९ में प्रजापति के गुण वाले पशुओं में हाथी का नाम आया है। इसी प्रकार मंत्र ३१ में छोटे घोड़े और विशेष सिंह को प्रजापति का पशु माना गया है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने यजुर्वेद-भाष्य में यजु. २९.५८ के भावार्थ में लिखा है कि हे मनुष्यों। तुम लोगों को चाहिए कि जिस देवता वाले जो-जो पशु विख्यात् हैं वे उन उन गुणों वाले उपदेश किये हैं ऐसा जानो। पशुओं की देख भाल ठीक हो।

यजुर्वेद अध्याय २५ मंत्र में ३२ में कहा गया है-

यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति।
यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु।।

भावार्थ- मनुष्यों को ऐसी घुड़साल में घोड़े बाँधने चाहिए जहाँ इनका रुधिर आदि मांछि आदि न पीवें। जैसे यज्ञ करने वाले के हाथ में लिपटे हुए हवि को धोने आदि से छुड़ाते हैं वैसे ही घोड़े आदि पशुओं के शरीर में लिपटी धूलि आदि को नित्य छुड़ावें।

यजुर्वेद अध्याय २५ मंत्र ४१ का भावार्थ है- हे मनुष्यों। जैसे घोड़े को सिखाने वाला चतुर जन चौंतीस चित्र विचित्र गतियों से घोड़े को प्रकाशित करता है वैसे ही और पशुओं की रक्षा कर उनकी उन्नति करनी चाहिए।

- ७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा- ३२४००९ (राज.)

कोशिश और सफलता

आयेशा नूर कलकत्ता की एक अत्यन्त गरीब बस्ती में पैदा हुयी। उसके पिता एक आटो रिक्शा चलाते थे। छः वर्ष पूर्व उनकी मृत्यु के बाद उसकी माँ शकीला बी जैसे-तैसे घरों में कार्य कर घर चलाने का प्रयत्न करती। बाद में उसका भाई भी फुटपाथ पर जूते बेचने का काम करने लगा। छः जनों के इस परिवार का खर्च बमुश्किल ही चल पाता था, उस पर आयेशा की मिर्गी की बीमारी। कौन सोच सकता है कि ऐसी परिस्थितियों में एक गंभीर बीमारी से ग्रसित लड़की कुछ बड़ा सोच भी सकती है। परन्तु आयेशा ने न सिर्फ सोचा बल्कि मुश्किलों से जूझते हुए भी अपनी मंजिल प्राप्त की। आयेशा को न सिर्फ गरीबी से जूझना था बल्कि मिर्गी की बीमारी को भी हराना था। जिसके कारण उसे स्कूल भी छोड़ना पड़ा। उसकी बीमारी की दवाइयों पर ही अनुमानतः २२०० रुपये प्रतिमास खर्च हो जाते थे जो कि उसके भाई की प्रतिदिन की आय १३० रुपयों को देखते काफी मुश्किल था। पर परिवार ने हार नहीं मानी। शकीला ने घरों में काम करना शुरू कर दिया।

आयेशा कराटे सीखना चाहती थी। जैसे तैसे कुछ व्यक्तियों ने उसकी मदद की और उसने ब्लेक बेल्ट होल्डर एम.ए. अली से ट्रेनिंग लेनी शुरू की। अली उसे शहर के बाहर ले जाते थे और उसने अपनी ट्रेनिंग बजाय पंचिंग बैग के, केले के पेड़ पर की।

ऐसे में थाईलैंड में होने वाली ४० देशों की कराटे प्रतियोगिता- थाई पिचई अंतर्राष्ट्रीय कराटे चौम्पियनशिप- नूर के लिये एक अवसर लेकर आयी परन्तु उसके पास बैंकाक जाने के लिए पैसे नहीं थे। अली ने भागदौड़ की। स्थानीय मीडिया में उसकी प्रतिभा का जिक्र किया गया तब कुछ एन.जी.ओ. व अन्यों ने सहायता की और नूर प्रतियोगिता में भाग ले सकी।

कोई सोच भी नहीं सकता था कि यह पतली सी लड़की प्रतियोगिता में कोई करिश्मा कर सकती है। परन्तु रिंग में जाते ही नूर जैसे शेरनी बन जाती। उसने स्वर्ण पदक अपने नाम किया। स्वदेश लौटने पर जब केन्द्रीय खेल मंत्रालय की तरफ से सम्मान का प्रस्ताव आया तो अली को लगा अब आगे की अड़चनें समाप्त हो जायेंगी। पर तभी चुनाव आ गए और चुनावों के पश्चात् अधिकारियों ने अली के फोन का उत्तर देना भी बंद कर दिया।

परन्तु नूर ने हिम्मत नहीं हारी। प्रतिकूलताओं में भी उसने अपना मनोबल बनाए रखा है। निर्भया काण्ड के बाद देश भर में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर चिंता व्याप गयी और इस बात पर जोर दिया जाने लगा की महिलाएँ कराटे जैसी आत्म-सुरक्षा तकनीक सीखें।

नूर कलकत्ते में अपने कोच के साथ मिलकर लड़कियों को कराटे की मुफ्त ट्रेनिंग दे रही हैं।

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

I'am writing an article about shri Dayanand swami. He was a great example for us. The story & pics are very inspiring. The story and pics will help me in writing an article. Its very very impressive. People work here maintained it nicely. It's great Pleasure for us to visit such wonderful place.

-Suchita jhala, Hiran magri, sec-3

अतुलनीय, प्रेरक, समभाव, वास्तव में बहुत ही सुन्दर एवं यहाँ का वातावरण शिक्षा एवं पवित्र सुख प्रदान करने वाला है। मैं यहाँ आकर खुश हूँ।

- प्रदीप कुमार, कडवासरा

अद्‌भुत! प्रत्येक व्यक्ति को गहन अध्ययन करना चाहिए ताकि अपनी अमूल्यनिधि को जाने।

- आनन्द राय

बहुत ही अद्‌भुत और दुलर्भ संग्रह है प्राचीन ग्रन्थों का। यह देखकर मन प्रसन्न हो गया।

- रवीन्द्र सिंह शेखावत, जयपुर

सृष्टि के सृजन काल से आर्यावर्त में वेद का प्रभाव इतना अधिक रहा है कि अनेक वेद मंत्रों का भावाशय ज्यों का त्यों लोकभाषाओं में व्यवहृत होता देखा जा सकता है। भाषा में हम कुछ कहावतें सुनते हैं यथा नाप तोल कर चलो अर्थात् संयत होकर सन्तुलित रूप से अपने कार्यों को सम्पन्न करो। यदि ऐसा नहीं करोगे तो दण्ड के भागी बनोगे। इन कहावतों की झलक जिस वेद मंत्र में मिलती है आइये इसका पाठ करें:-

अमासि मात्रां स्वरगामायुष्मान्भूयासम्।
यथापरं न मासातै शते शरत्सु नो पुरा।। – अथर्व १८/२/४५

अर्थात् (मात्रां अमासि) मैंने मात्रा को मापा है। जीवन व्यवहार का प्रत्येक कार्य माप तोलकर किया है। मैंने युक्ताहार विहार का ध्यान रखा है। सोना जागना भी मर्यादा में ही किया। सभी क्षेत्रों में युक्तचेष्ट रहा हूँ। इसी से स्वः अगम सुख व आत्म प्रकाश को मैंने प्राप्त किया है। जिससे 'आयुष्मान भूयासम्' मैं प्रशस्त दीर्घ जीवन वाला बन सकूँ। मर्यादा में मैंने इसीलिए मापा है-अनुपालित किया है कि 'यथा अपरं न मासातै' कोई और वस्तु न मुझे नाप ले। 'शतेशरत्सु' पूरा सौ वर्ष की आयु पूर्ण होने से पहले ही न मैं नप जाऊँ। आज हो या कल अर्थात् सर्वत्र सर्वदा ही मंत्र वर्णित मात्रा या मर्यादा प्रतिपल सुफल प्रदान करती है।

तेज दौड़ने वाला खरगोश यदि मार्ग में कभी दौड़ता है कभी सो जाता है तो धीरे-धीरे चलते रहने वाले कछुये से भी हार जाता है। सतर्क बुद्धि से काम लेने वाला खरगोश बलशाली शेर को भी पराजित कर देता है। जंगल में नये आ गए शेर ने प्राणियों की अन्धाधुन्ध हत्याएँ करना आरम्भ कर दीं। सभी पशु प्राणियों ने बैठकर के शेर को इस बात के लिए सहमत कर लिया कि हे वनराज आप हम सभी की अधिक हत्यायें नहीं करें। हम प्रतिदिन एक पशु आपकी सेवा में आहार हेतु भेज दिया करेंगे। आप की बिना किसी कष्ट के अपने स्थान पर ही उदरपूर्ति होती रहेगी। शेर के दिन भली भाँति बीतने लगे। एक दिन बहुत विलम्ब के बाद नन्हा खरगोश उसके पास आ पहुँचा तो शेर अत्यधिक क्रोधित हो उठा। खरगोश ने नम्र शब्दों में बताया महाराज! मार्ग में एक और शेर स्वयं को जंगल का राजा बता रहा था। बहुत कठिनाई से बचकर आपके पास आ सका। आप न मानें तो चलकर देख लें। खरगोश ने शेर को ले जाकर कुएँ पर खड़ा कर दिया। भीतर झाँका तो वैसा ही शेर परछाई के रूप में देख दहाड़ लगा दी। दहाड़ की प्रतिध्वनि सुनकर क्रोधित शेर आक्रमण के लिए कुएँ में कूद पड़ा। खरगोश की जान तो बची ही, प्राणियों की अन्धाधुन्ध होने वाली हत्याओं से भी वनचरों को राहत मिल गई।

आशय यह नहीं कि शेर की प्रजातियाँ ही समाप्त हो जायँ उनकी वंशवृद्धि भी आवश्यक है। इसीलिए शासन द्वारा उनकी सुरक्षा के लिए परियोजनाएँ चलायी जाती हैं जिनसे अन्य वन्य प्राणियों की वृद्धि पर भी बल दिया जाता है। यदि यही शेर या अन्य प्राणी जंगल से निकल कर नागरिक क्षेत्रों में घुस पड़ते हैं तो उनके द्वारा मर्यादा का उल्लंघन है जिस के लिए उन्हें दंडित भी करना पड़ता है। मंत्र में प्रयुक्त यह 'मास' शब्द अंग्रेजी की वैज्ञानिक शब्दावली में ज्यों का त्यों जाकर बैठ गया है। यहाँ पर यह मात्रा का बोधक है जो भार से भिन्न है। भार गुरुत्वाकर्षण से प्रभावित होकर कम या अधिक होता रहता है। किन्तु मात्रा का परिमाण अपरिवर्तित रहता है। ऐसे ही वेदोक्त मर्यादायें भी सदैव शाश्वत व सर्वहितैषी बनी रहती हैं। वेद में इस मर्यादा के सन्तुलन पर विशेष बल दिया गया है। अथर्ववेद १८.२.३५ से ४४ तक के सात मंत्रों में इसके लिए प्रखर प्रोत्साहन के संकेत निहित हैं।

इमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै।
शते शरत्सु नो पुरा।। - अथर्व २८/२/३८

अर्थात् सब प्राणी परमेश्वर की ही वेदोक्त आज्ञा में रहकर निर्वाह करते हैं; सौ वर्षों में भी कोई उस मर्यादा को माप नहीं सकता, जो इसके विपरीत आचरण करता है, वह दंड का भागी बनता है। इन मंत्रों में क्रमशः इमाम् (मात्रा), प्रेमाम् (प्रकृष्ट रूप से) अपेमाम् (सुख रूप से) वीɜमाम् (विशेष रूप से) निरिमाम् (निश्चय रूप से) उदिमाम् (उत्तम रूप से) समिमाम् (सन्तुलित रूप से) जीवन के व्यवहार को बनाता है वह सफलता के उच्च शिखर पर पहुँच जाता है।

"तप, दान, शान्ति, संयम, लज्जा, सरलता, जीवों के प्रति दयाभाव यही स्वर्ग के सात द्वार हैं।"

यहाँ पर राजा ययाति का अनुभव सुनिये। वे अपने सद्गुणों के सहारे स्वर्ग में पहुँच गये थे। एक दिन उन्होंने कठोर वचन बोल दिए थे तो इन्द्र ने उन्हें ऐसा धक्का दिया कि वे पृथ्वी पर आकर ठहर गए। अष्टक नामक प्रेमी उनसे मिलने आये और स्वर्ग से धरती पर आ जाने का कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया अहंकार एवं वाणी का असन्तुलन तमाम पुण्यों को क्षीण कर देता है। उन्होंने बताया तप, दान, शांति, संयम, लज्जा, सरलता, जीवों के प्रति दयाभाव यही स्वर्ग के सात द्वार हैं। इन्हीं सद्गुणों को धारण कर मानव स्वर्गीय हो सकता है। वेदानुसार स्वर्ग कोई स्थान विशेष नहीं प्रत्युत् अवस्था विशेष है। प्रतिष्ठा की पराकाष्ठा भी पल भर का प्रदर्शन है।

जिस शिला पर पहुँच हो वहाँ भूकम्प भी आ सकता है। इतना समय नहीं मिलता कि सचल दूरभाष पर आने वाले संदेश देख पाऊँ। पर मेरी पुत्री कोई अच्छा संदेश आने पर मन में हर्ष की लहर उत्पन्न कर देती है। एक ऐसे ही संदेश के द्वारा मैं लेख का उपसंहार करता हूँ। पढ़िये-

व्यवहार मीठा न हो तो हिचकियाँ भी नहीं आतीं।
बोल मीठे न हों तो मूल्यवान मोबाइलों पर घंटियाँ भी नहीं आतीं
घर बड़ा हो या छोटा, मिठास न हो तो इंसान क्या चीटियाँ भी नहीं आतीं।
जीवन का आरम्भ अपने रोने से होता,
जीवन का अन्त दूसरों के रोने से,
इस आरम्भ व अन्त का समय ही जीवन है।
इंसान आदरणीय अपने कर्म से होता है धन दौलत से नहीं
बस इतना देना मेरे मालिक
अगर जमीन पर बैठूँ
तो लोग उसे मेरा बड़प्पन कहें मेरी औकात नहीं।

- वरेण्यम् अवन्तिका प्रथम
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ २०२००१ (उत्तरप्रदेश)

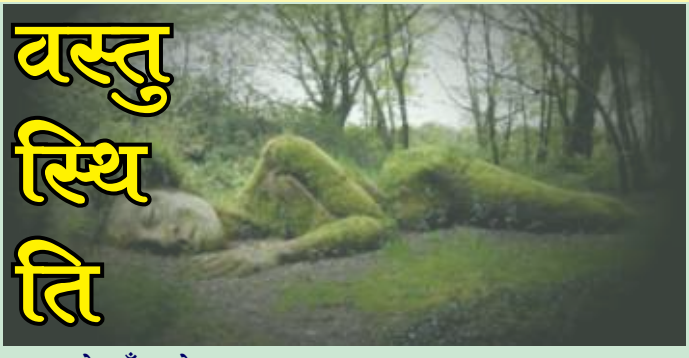

उपवन के आँगन से
पुष्प सभी लापता हैं
बसन्त के मौसम में भी
घुटन है
चुप्पी है
सन्नाटा है।
अच्छी पैदाईश से उत्साहित
धरती पर पापों की खेती करना
अब सबको बेहद सार्थक लगने लगा है.....
हवा और प्रदूषण की
मित्रता हो गई है।
बादलों ने सूखे से
समझौता कर लिया है।
कुछ अनुबंधित शर्तों पर
साँप और नेवला एक हो गए हैं।
सत्य निर्वासित है
भ्रष्टाचार पाखण्डी गुरुओं की शरण मे आकर
सुविधा भोगी हो गया है।
कर्म चालाकी का पर्याय बन गया है
निष्ठाएँ अवसरवादी
और आस्थाएँ पलायनवादी बन गई हैं।
श्रेय निर्वासित
प्रेय चर्चित है,
भीष्म का पराक्रम
शिखण्डियों को समर्पित है।

महात्मा चैतन्यमुनि
महादेव, सुन्दरनगर- १७४४०१ (हिमाचलप्रदेश)

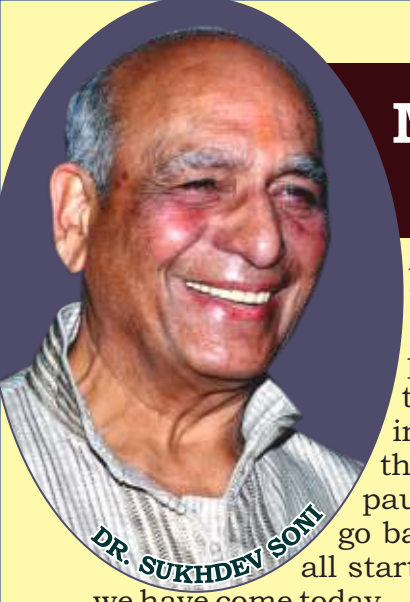

MESSAGE OF A PRESIDENT

(Arya Samaj chicagoland)

As 2015 comes to an end, what a year!It's been productive, tumultuous and inspiring journey this year and as I pause and reflect. I go back to where we all started and how far we have come today.

OUR JOURNEY

The Arya Samaj of Chicagoland has been promoting Vedic philosophy in the Chicagoland area over the last 30 years. My family and I came to Chicago from Burma in June, 1968 with my wife, our young son and daughter. At that time, there were very few Indians in Chicago, let alone temples or mandirs. Mr Ram Goel started the Geeta Society from his home (it was later changed to the Hindu Society and now called the Hari Om Mandir and Hindu Satsang). Between Mr. Goel and our family, we kept havan kunds and Vedic books in our car trunks, driving long distances to do havans for special occasions. To allow more people to come together, we started monthly havan services in Oak Park with the Hindu Society until the early 80s. Around this time, we joined hands with the Arora family (co-founders of the Hari Om Mandir) and started havans at the Hari Om Mandir every month. **In the early 90s, we got the opportunity to buy and convert an old church in West Chicago to be the current Arya Samaj as it stands today.** Mr. & Mrs. K. B. Rai were the main pandits followed by Acharya Om Dutt. In 1993, Pandit Dilip Vedalankar ji joined us from Houston until his recent passing three years ago, growing the Arya Samaj community to a strong network in the Chicagoland area.

WHY IS THIS IMPORTANT? WHAT IS THE HISTORY?

Founded by Swami Dayananda on April 7, 1875, the Arya Samaj stood against any and all discriminatory practices such as idol worship and rituals created by the Brahmins to dominate society, social stigma such as as casteism and untouchability, child marriage and forced widowhood, which were prevalent in the 19th century, all the way to the struggle for India's independence. A long list of revolutionaries has been behind the Arya Samaj movement from all parts of India (Punjab, Maharashtra, Gujarat) including Subhash Chandra Bose, Lala Lajpat Rai, Swami Shraddhanand, Pandit Lekh Ram, Sardar Vallabhai Patel. Swami Dayanand believed that going back to the roots of the Hindu faith - the Vedas – Hindus could improve their social, political, and economic conditions.

BACK TO THE VEDAS

Arya Samaj is a reform movement to revitalize the roots of Hinduism and the Vedas. In order to re-energize Vedic knowledge of the four Vedas - Rig Veda, Yajur Veda, Sama Veda, and Atharva Veda - Swami Dayanand wrote and published a number of books, including ***Satyartha Prakash, Rig-Vedaadi, Bhasya-Bhoomika, and***

Sanskar Vidhi. The Vedas date back to the beginning of Indian civilization and are the earliest literary records of the Aryan race. Passed orally for over 100,000 years and in written form about 6,000 years ago, the Vedas lay the foundations of the earliest sciences including medicine, mathematics, yoga and astronomy.

OUR VISION GOING FORWARD

Hindus today are spread in a wide diaspora across the world from Asia,

Africa to the Americas. We have broken across barriers of culture, economics, religious sects, language and color, yet the focus has shifted away from our roots once again – families and community. Once again, a revitalizing movement is needed to come together around universal principles of truth, spirituality, community and faith. **I urge you at this important juncture in time, to get involved and especially involve our youth in the basic principles of Hinduism so that as new generations grow and rise, the values and principles of the Vedas that have survived thousands of years, may serve and support future generations as well.**

Thank You

Many established members of our community today have served as early officers of the executive committee of the Arya Samaj. I thank them for their earliest support and to the executive committee members today, who are helping us build and take it forward.

With the support of this fantastic committee, 2015 was a landmark year for the Arya Samaj! We had a successful Sammelan in July 2015 with scholars and spiritual leaders here from all across India. We had our first ever fundraiser which brought together close to 400 people in the community and where we raised over $45,000, not to mention the in-kind contributions for the venue, food, services, raffle prizes and organization. We came together as a group and demonstrated how powerful our Arya Samaj family is today and can continue to be.

As I approach the dawn of 2016, I am excited for what the future holds. How can we together make 2016 a landmark year where we increase our membership base and involve more children and families into our mix. For with any institution, we are only as successful as our youth leaders of tomorrow.

I encourage each of you to play a role in building this shared community through (i) **becoming a lifetime member;** (ii) **one time financial contribution;** and (iii) **sponsoring future projects** (hindi classes, Vedic classes, senior citizen community center, etc). But most importantly I urge each of you to **dedicate one Sunday of this upcoming year** where you personally invite all of your family and friends to attend the Arya Samaj so that we may expose more members of our community towards higher thinking, higher living.

Happy New Year 2016!

PRESIDENT AND FOUNDER
ARYA SAMAJ OF CHICAGOLAND

भोगवादी संस्कृति के दुष्प्रभावों से बचने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिह्नों पर चलना सीखें

– कृष्ण बोहरा

आज हम इक्कीसवीं शताब्दी में जीवन यापन कर रहे हैं। विज्ञान की प्रगति के कारण सब प्रकार के सुखों का उपभोग कर रहे हैं।

घर-घर रंगीन टेलीविजन, मोबाइल, रेफ्रीजरेटर, वाशिंग मशीन तथा अन्य सुख देने वाली वस्तुएँ पहुँच गई हैं। इतना सब होने पर भी परिवारों में आपसी झगड़े, कलह व दुःख बढ़ गए हैं। सरेआम चोरी, डाका, ठगी, बलात्कार, आत्महत्या की घटनाएँ बढ़ गई हैं। शिक्षित युवा वर्ग बेरोजगार हो रहा है। शराब, सुलफा, भांग, स्मैक, पान मसाला, गुटखा आदि के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। भोगवादी संस्कृति का तेज गति से प्रसार हो रहा है। हर व्यक्ति पलक झपकते ही करोड़पति बनना चाहता है। वह बिना मेहनत के अधिक से अधिक धन कमा कर अपना जीवन सुखी बनाना चाहता है। अपने बीबी बच्चों को महँगी कारों में सैर करवाना चाहता है। अब माता-पिता के प्रति पहले जैसा आदर सम्मान नहीं रह गया है। बड़े-बड़े नगरों में वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ रही है। अश्लील फिल्मों का प्रदर्शन हो रहा है। धनी परिवारों में रात्रि को महँगे होटलों में खाना खाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। दैनिक समाचार पत्रों में भी अश्लील चित्रों के प्रदर्शन की होड़ लगी हुई है। हर पत्र अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना चाहता है। आज उसके लिए समाज एवं राष्ट्र के मुद्दे गौण हो गए हैं। भौतिकवादी संस्कृति के प्रति आकर्षण एवं रुझान बड़ी तेज गति से बढ़ रहा है। क्या यही था महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्वप्न जिसे हम साकार कर रहे हैं? यह हमारे अधोपतन की स्थिति है। स्वामी जी तो हमें सत्यार्थप्रकाश, श्रीमद् भागवत गीता, रामायण का ज्ञान देते थे।

सत्यार्थप्रकाश में ऐसा ज्ञान है जो हमें सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। इसके निरन्तर अध्ययन से हमें परिवार, समाज व देश के प्रति कर्तव्यों की अनुभूति होती है। सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए हम धर्मस्थानों, तीर्थ स्थानों पर भटक रहे हैं। लेकिन यह सुख हमारे अन्दर निहित है। हमारे द्वारा किए गए कर्मों में निहित है। आज भोगवाद की बढ़ रही प्रवृत्ति ने ही हमें दुःखी कर दिया है। हम अपनी इच्छाओं की पूर्ति में इतने लिप्त हो गए हैं कि हम अपना धर्म ही भूल गए हैं। आज हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर सकें। आज हम प्रातःकाल उठते ही समाचार पत्रों की ओर दौड़ते हैं जो अश्लील समाचारों से भरे रहते हैं। सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली महिलाओं के देह प्रदर्शन के चित्रों से भरे रहते हैं। आज लगभग सभी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन संस्थाएँ मॉडलों, सिनेमा के अभिनेताओं, अभिनेत्रियों के चित्र प्रकाशित करके आवश्यक वस्तुओं के दामों में भारी वृद्धि करके लाखों करोड़ों रुपये कमा रही हैं और हम कोल्हू के बैल की तरह दिन रात काम करके भी अधिक से अधिक धन कमाने में लगे हैं। आज हम आधुनिक बने रहने के लिए अपनी दैनिक जीवनचर्या को ही भूल बैठे हैं। देर रात तक सोते हैं और देरी से उठते हैं। इसीलिए आज सुख हमारे से कोसों दूर चला गया है। हम रोगों के शिकार हो रहे हैं और हमारा जीवन साठ वर्ष की आयु तक ही सिमट कर रह गया है। भोगवाद के बढ़ते प्रभाव ने ही यह सारी समस्याएं पैदा की हैं। आज

सत्यार्थप्रकाश, श्रीमद्भागवत गीता और रामायण जैसे ग्रन्थों के ज्ञान को घर घर तक पहुँचाने की आवश्यकता है। आज महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिह्नों पर चलने की आवश्यकता है।

भोगवाद के कारण ही आज प्रेम, स्नेह, आत्मीयता, त्याग एवं नैतिकता आदि मानवीय गुणों का पतन हो रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व के सबसे अधिक धनी देश में

आज मानवता सिसक रही है। सब कुछ होते हुए भी अनिद्रा रोग बढ़ रहा है। आज हमारे अपने देश भारत के महानगरों में भी यह स्थिति जन्म ले रही है। मानवता को खतरा पैदा हो गया है। पश्चिमी विचारक इस खतरे से बचने के लिए निष्काम कर्मयोग के सिद्धान्त को रामबाण औषधि मान रहे हैं।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को युद्ध भूमि कुरुक्षेत्र में गीता ज्ञान उस समय देते हैं जब वह युद्ध से विमुख हो जाता है। श्रीमद्भागवत गीता के तीसरे अध्याय में निष्काम कर्मयोग का वर्णन है। श्रीकृष्ण कहते हैं हे अर्जुन तुम अपनी इन्द्रियों मन और बुद्धि पर नियंत्रण करो और इस महापापी कामना जो कि ज्ञान व विज्ञान दोनों का नाश करने वाली है का अन्त करो। यह आदेश विचित्र लग सकता है। कामनाओं पर नियंत्रण की बात तो समझ में आती है किन्तु उनका अंत करना निश्चित ही विचित्र है। बिना कामनाओं के कोई भी व्यक्ति कर्म ही न करेगा। आखिर कर्म किसी कामना की पूर्ति के लिए ही तो किए जाते हैं। गौर करें कर्म तो प्रकृति कर रही है हम नहीं। और प्रकृति कर्म करती रहेगी। भूख प्यास तो लगती रहेगी और शरीर उन्हें तृप्त करने के लिए कर्म करता रहेगा। बुद्धि द्वारा हमें शरीर से वे ही कर्म करते रहना है जो आवश्यक हैं। जो भी अनावश्यक कर्म हैं उनका त्याग करते रहना है। जो कर्तव्य हैं उन्हें करना है। परिवार समाज व देश के प्रति कर्तव्य। इसी में सच्चा सुख है। सच्चा आनन्द है। कस्तूरी मृग की नाभि में है और मृग दौड़ रहा है। इसी प्रकार हम कामनाओं के वशीभूत दौड़ रहे हैं और अनेक समस्याओं के शिकार हो रहे हैं।

आओ आज हम भोगवादी संस्कृति के दुष्प्रभावों से बचने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिह्नों पर चलना सीखें।

– सेवानिवृत्त प्रिन्सिपल, मुहल्ला जेल गराऊड़, मकान नं. ६४१, सिरसा, हरियाणा

मन का मनका फेर

कथा सरित

एक दिन एक आदमी साधू के यहाँ गया और उस से अपनी समस्या रखी कि महाराज मेरी पत्नी जरा भी धार्मिक नहीं है। पूजा पाठ के कामों में जरा भी ध्यान नहीं देती है। अगर आप उसे थोड़ा समझा देते तो उसे थोड़ा बोध हो जायेगा और हो सकता है वो धर्म-कर्म के कामों में अपना मन लगा ले।

इस पर साधू ने कहा चलो ठीक है, मैं कल सुबह ही तुम्हारे घर आऊँगा। अगले दिन साधू जब उस व्यक्ति के घर पहुँचा तो घर के कामकाज में व्यस्त उसकी पत्नी से पूछा कि- बेटी तुम्हारे पति कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं तो इस पर उसकी पत्नी ने कहा कि महाराज वो चर्मकार की दुकान पर गये हैं। इस पर अंदर माला फेर रहा उसका पति उठकर आया क्योंकि उसने

पत्नी की बात सुनी और उससे झूठ सहा नहीं गया। और बोला कि तुम झूठ क्यों बोल रही हो मैं अंदर था जबकि तुम्हें तो पता भी था, इसके बाद भी तुम साधू से झूठ बोल रही हो। साधू हैरान रह गया। उसकी पत्नी ने बोला कि आप चर्मकार की दुकान पर ही थे। आपका शरीर पूजाघर में और माला हाथ में थी लेकिन फिर भी आपका मन चर्मकार की दुकान में ही था और आप उसके साथ बहस कर रहे थे। पति को होश आया। पत्नी ठीक ही कह रही थी। माला फेरते-फेरते वह चर्मकार की दुकान पर चला गया था क्योंकि उसने कल ही जो जूते लिये थे वो खराब निकल गये थे इसलिए सोच रहा था कि क्या-क्या खरी खोटी दुकानदार को सुनानी है और इसलिए वह मन ही मन उस चर्मकार से बहस कर रहा था।

पत्नी जानती थी कि उसका ध्यान कितना मग्न रहता है और रात में वो जूतों के लिए जिस तरह शिकायत कर रहा था और सुबह-सुबह ही जूते बदलवा लेने की उसकी इच्छा पत्नी से छुप नहीं पायी, इसलिए वो सब जानती थी। पत्नी की साधना कमाल की थी उसने साधना के महत्व को आत्मसात कर लिया था इसलिए साधू ने उस देवी को प्रणाम कर वहाँ से विदा ली।

समाचार

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी,उड़ीसा का षष्ठ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी,उड़ीसा का षष्ठ वार्षिक महोत्सव दिनांक २६ से ३१ जनवरी २०१६ में भव्य रूप में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ध्वजारोहण गुरुकुल के प्रधान श्री जयदेव आर्य ने किया और लेखवीर श्री खुशहाल चन्द आर्य, कोलकाता ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम में पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, श्री ए.वी.स्वामी (सांसद राज्यसभा), वसन्त कुमार पण्डा, विधायक नुआपाड़ा, स्वामी शान्तानन्द सरस्वती, श्री पंडित वीरेन्द्र कुमार पण्डा आर्यश्रेष्ठ श्री दीनदयाल गुप्त आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। गुरुकुल के कुलपति वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य ने आशीर्वचन प्रदान किए। - डॉ. सुदर्शन देव आचार्य

राज्य स्तरीय चेतना शिविर सम्पन्न

आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी महासमुन्द में २३ दिसम्बर से २७ दिसम्बर २०१५ को राज्य स्तरीय युवा चेतना शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमें प्रदेश के अनेक विद्यालय के छात्रों ने योगासन, जूडो कराटे के साथ साथ वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त की। इस संपूर्ण आयोजन के प्रेरणा स्रोत स्वामी धर्मानन्द सरस्वती व गुरुकुल के आचार्य कोमल कुमार थे।

आर्य समाज, आबू रोड का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, आबूरोड एवं श्री वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड का वार्षिकोत्सव १५ से १७ जनवरी २०१६ में सोत्साह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्वानों द्वारा भजनोपदेश व उद्‌बोधन प्रस्तुत किए गए। १६ जनवरी २०१६ को प्रतिभा सम्मान समारोह के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा थे। - मोतीलाल आर्य, प्रधान

गुरुकुल कोसरंगी में राज्य स्तरीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण सम्पन्न

छत्तीसगढ़ संस्कृत विद्या मंडलम और गुरुकुल के संयुक्त तत्वावधान में

५ दिसवीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण दिनांक 1.1.16 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संस्कृत विद्यालयों के ७० से अधिक विद्वान् शिक्षकों ने अपने अनुभव में बताया और कहा कि संस्कृत व्याकरण एवं संस्कृत सम्भाषणम् के प्रशिक्षण की अधिकाधिक आवश्यकता है। इस अवसर पर विदुषी शकुन्तला शर्मा ने अपने द्वारा रचित संस्कृत ग्रन्थों के हिन्दी पद्यानुवाद की ६ पुस्तकें प्रशिक्षणार्थियों में वितरित की।

आर्य समाज का वार्षिकोसव सम्पन्न

महिला आर्य समाज, मानसरोवर, जयपुर ने अपना २० वाँ वार्षिकोत्सव २५ से २६ नवम्बर २०१५ तक मनाया। इस अवसर पर सम्पन्न ऋग्वेद पारायण यज्ञ में ब्रह्मा की भूमिका कन्या गुरुकुल हाथरस की प्राचार्या डॉ. पवित्रा आर्य ने निभाई। मेरठ के भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य द्वारा भजनोपदेश प्रस्तुत किए गए। इसके अतिरिक्त जयपुर के श्री एम.एल.गोयल, श्री अशोक शर्मा, आचार्य उषर्वबुध आदि का सानिध्य रहा। - ईश्वर दयाल माथुर, उप प्रधान

आर्यवीर दल राजस्थान के तत्वावधान में शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन, रातानाड़ा, जोधपुर में आर्यवीर दल राजस्थान के तत्वावधान में प्रान्तीय योग, व्यायाम प्रशिक्षण व व्यक्तित्व निर्माण शिविर २७ दिसम्बर २०१५ से ३ जनवरी २०१६ तक सम्पन्न हुआ। श्री सत्यवीर आर्य, प्रान्तीय संचालक आर्यवीर दल, राजस्थान के अनुसार अनेक युवाओं ने इस अवसर पर शारीरिक प्रशिक्षण के साथ साथ गहन सैद्धान्तिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। - आर्य किशन लाल गहलोत, शिविर संयोजक

गुरु विरजानन्द यादगारी भवन बनेगा

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, करतारपुर के द्वारा प्रयत्न करने पर पंजाब सरकार द्वारा गुरु विरजानन्द यादगारी भवन बनाने का

प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया गया है। इस भवन हेतु भूमि व भवन पर होने वाला सारा व्यय पंजाब सरकार द्वारा किया जायेगा।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार एतदर्थ पंजाब सरकार के प्रति धन्यवाद प्रकाशित करते हैं एवं गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर के प्रधान श्री ध्रुव कुमार जी मित्तल के निवेदन को प्रस्तुत करते हुए आर्य जगत् से अपेक्षा रखते हैं कि वे इस हेतु पंजाब सरकार को धन्यवाद पत्र अवश्य लिखें। - ध्रुव कुमार मित्तल, प्रधान

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक १३ सितम्बर को डॉ. पवित्रा वेदालंकार के ब्रह्मत्व में ११ कुण्डीय राष्ट्र

समृद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. पवित्रा के अतिरिक्त आचार्य अग्निमित्र शास्त्री तथा कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. परमेन्द्र दशोरा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। डीएवी स्कूल कोटा की प्राचार्या सविता रंजन गौतम व कोटा की पूर्व महापौर श्रीमती सुमन शृंगी ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर डीएवी स्कूल तलवंडी के छात्र छात्राओं द्वारा मंत्रों पर आधारित नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। बिजनौर से पधारे भजनोपदेशक श्री भीष्म आर्य ने अपने भजनोपदेशों से सभी को प्रभावित किया। - अर्जुनदेव चड्ढ़ा

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री की मॉरीशस यात्रा

अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने मॉरीशस में वहाँ की राष्ट्रपति महामहिम अमीना गरीब हकीम से राष्ट्रपति भवन में भेंट कर उन्हें वैदिक साहित्य प्रदान किया एवं राष्ट्रपति महोदया के आयुर्वेद पर किए गए उल्लेखनीय कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर आर्य सभा मॉरीशस के महामंत्री श्री हरिदेव रामधनी व अन्य पदाधिकारी उपस्थित थें। - सूर्यकान्त मिश्र

हलचल

आर्य समाज द्वारा विशाल धरना एवं प्रदर्शन

गो हत्या एवं गौमांस निर्यात तथा कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे के विवादित बयान कि आर्य बाहर से आये हुए हैं के विरुद्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में १६ दिसम्बर २०१५ को जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली पर विशाल धरना व प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने श्री खड़गे द्वारा दिए गए बयान कि आर्य भारत के मूल निवासी नहीं हैं का खण्डन करते हुए स्थापित किया कि पाश्चात्य विद्वानों के उच्छिष्ट भोजी लोग ही इस तरह की इतिहास विरुद्ध बातें करते हैं तथ्य यही है कि आर्य कहीं बाहर से नहीं आये बल्कि आर्यों की संस्कृति व सभ्यता उनके यहाँ से बाहर जाने पर उनेक साथ सम्पूर्ण विश्व में फैली। इस अवसर पर प्रो. विट्ठल राव आर्य, पंडित माया प्रसाद त्यागी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

टंकारा में महोत्सव

महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋषिबोधोत्सव का आयोजन ६ से ८ मार्च २०१६ में भव्य रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अधिकाधिक आर्यजनों का भाग लेना अपेक्षित है।

- अजय सहगल

आर्य समाज, रावतभाटा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, रावतभाटा का ४६ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक २२ से २४ नवम्बर २०१५ में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् स्वामी शान्तानन्द सरस्वती एवं भजनोपदेशक उदयवीर सिंह आर्य ने अपने प्रवचनों व भजनों से उपस्थित जनता को लाभान्वित किया। वार्षिकोत्सव के समापन अवसर पर सभी विद्वानों को शॉल ओढ़ाकर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढ़ा द्वारा सम्मानित किया गया।

- ओम प्रकाश आर्य, मंत्री आर्य समाज, रावतभाटा

संस्कार शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतहनगर के तत्वावधान में बालकों व युवाओं में वैदिक संस्कारों के बीजारोपण की भावना से २५

से २८ दिसम्बर २०१५ तक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। संस्था के संस्थापक संचालक श्री सुरेश मित्तल व प्रधानाचार्या कविता शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर विभिन्न विद्वानों द्वारा शिविरार्थियों को महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं की जानकारी, विज्ञान के माध्यम से अन्धविश्वास मिटाने की जानकारी के साथ-साथ जीवनोपयोगी उद्बोधन एवं योगासन प्रशिक्षण, स्वास्थ्य रक्षण प्रशिक्षण, सदाचार शिक्षण व क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर न्यास के मंत्री श्री भवानी दास आर्य व संयुक्त मंत्री प्रो. डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने भी बालकों को अपने विचारों से लाभान्वित किया।

प्रतिस्वर

दिस. २०१५ का सत्यार्थ सौरभ अंक पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसमें लिपिबद्ध लेख एक से बढ़कर एक सार गंभीरता को अपने अन्दर संजोये है। वेद सुधा पति-पत्नी के मध्य आने वाली कटुता पर प्रकाश डालता है। आरक्षण पर आपके विचार सराहनीय है। प्रस्तुत पत्रिका साहित्यिक ज्ञान वर्धन के साथ-साथ धार्मिक प्रेरणा देती हुई स्वास्थ्य के प्रति सजगता व्यक्त करती हुई नारी सशक्तिकरण की भी रक्षक बनी आगे बढ़ रही है। हम इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

- रणसिंह, प्रधान बार एसोशियसन, लोहारु (भिवानी)

आर्य भजनों की धुन डाउनलोड करें

आर्य भजनों की धुनों को अपने मोबाइल के लिए डाउनलोड करें। इसके लिए आप निम्न साइट पर जायें। **Thearyasamaj.org** डाउनलोड निःशुल्क है।

समाज सेवा की अर्द्धशताब्दी पुस्तक का विमोचन

जिला आर्य सभा, कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढ़ा के सम्बन्ध में

प्रकाशित उक्त पुस्तक का विमोचन नोबल पुरस्कार विजेता व बचपन बचाओ आन्दोलन के प्रणेता श्री कैलाश सत्यार्थी ने अपने कार्यालय में किया। इस अवसर पर श्री अजय सहगल, श्री विनय आर्य, श्री रामप्रसाद याज्ञिक आदि ने अपनी शुभकामनाएँ श्री चड्ढ़ा को प्रेषित की।

सत्यार्थ प्रकाश का वितरण

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा द्वारा इंदिरा गाँधी नगर स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं को स्कूल किट वितरित करने के साथ-साथ स्कूल की लाइब्रेरी हेतु सत्यार्थप्रकाश भी भेंट किए गए।

- अर्जुनदेव चड्ढ़ा, जिला प्रधान

अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ में अग्निहोत्र के वैज्ञानिक प्रशिक्षण के लिए तथा उसके सभी आयामों से प्रशिक्षणार्थियों को परिचित कराने के उद्देश्य से नवनिर्मित अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन ३० दिसम्बर २०१५ को पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - २३ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २३** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री श्रवण कुमार गुप्ता, नालन्दा (बिहार), श्री राज सिंह, भिवानी (हरि.), श्री मानकचन्द नायक, बीकानेर (राज.), श्रीमती सुमन सैनी, बीकानेर (राज.), श्री रमेश चन्द्र शर्मा, बीकानेर (राज.), श्री गोविन्द भार्गव, बीकानेर (राज.), श्री रमेश आर्य, गुरदासपुर (पंजाब), मीरा देवी तोम्बलिया, शाहपुरा (राज.), ब्रह्मचारी जयदेव आर्य, माउण्ट आबू (राज.), श्री आशीष कुमार, महेन्द्रगढ़ (हरि.)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

राजधर्म क्या है ?

राजधर्म शब्द-राज और धर्म शब्द के योग से बना है। राज शब्द 'राजृदीप्तौ' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ होता है प्रकाशित होना, शोभित होना। धर्म शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश ६ समु. में करते हैं कि 'धर्म का अर्थ कर्त्तव्य।' अतः राजधर्म की परिभाषा हुयी कि 'जिस कर्त्तव्य कर्म के पालन से समाज, राष्ट्र और विश्व का कल्याण हो अथवा जिस कर्त्तव्य कर्म को धारण करने से समाज राष्ट्र और विश्व सुशोभित या उन्नति करता है, उसे राजधर्म कहा जाता है।'

आजकल विश्व में सर्वत्र लोग धर्म के पीछे पड़े हुए हैं। सर्वत्र डिंडिम घोष किए जा रहे हैं कि राजनीति में धर्म का कोई दखल नहीं होना चाहिये। जो राष्ट्र जितना धर्म निरपेक्ष होता है वह उतना ही प्रगतिशील राष्ट्र कहा जाता है। सभी राष्ट्र अपने को धर्म निरपेक्ष कहने में गौरव समझते हैं भारत वर्ष में तो और ही विचित्र दृश्य दृष्टिगोचर होता है। यहाँ बुद्धिजीवी वही है जो तथाकथित रूप से धर्म निरपेक्ष है। जो धर्म की बात करते हैं वे प्रगतिशील नहीं हैं। संसार में अन्य कई विचारकों ने भी धर्म के सत्य स्वरूप को न समझ इसकी निन्दा की है।

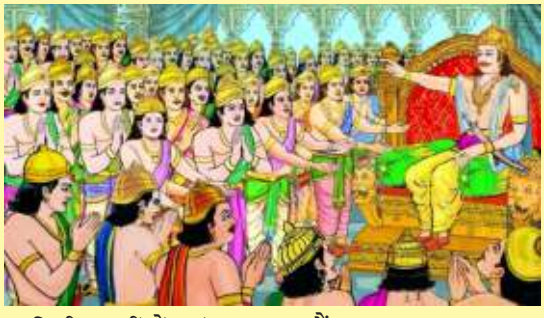

जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक नीत्शे ने घोषणा की कि 'संसार में कोई ईश्वर नामक सत्ता नहीं है। यदि किसी स्थान पर है, तो उसे नष्ट कर देना चाहिये।' १९०१ ई.- ११ जनवरी को फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान् बर्थोली ने पेरिस में अपने एक व्याख्यान में कहा था- 'धर्म का स्थान गया, अब धर्म का स्थान विज्ञान लेगा।' लेनिन ने १९०५ ई. में दिसम्बर ३ को कहा- 'धर्म लोगों के लिए अफीम है।' राष्ट्र के साथ धर्म का सम्बन्ध नहीं रहना चाहिये अथवा धर्मीय संस्था, समितियों के साथ सरकारी कर्तृपक्ष को कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये।' पर ध्यान से चिन्तन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह सारा विरोध धर्म तथा मजहब को एक ही (पर्याय) मानने के कारण हुआ है। धर्म तथा मजहब में बहुत अतंर है। पारसी, यहूदी, ईसाई और इस्लाम मत के लिए अरबी भाषा में मजहब शब्द का प्रयोग हुआ है और यूरोप में मजहब शब्द का अनुवाद सारजन बुड़रक ने (Religion) किया। दुर्भाग्य से भारत में अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग (Religion) का अर्थ धर्म करते हैं और मजहब, (Religion) मत, सम्प्रदाय का पर्यायवाची शब्द धर्म को मानते हैं। परन्तु यह सत्य नहीं है। महर्षि दयानन्द के राजधर्म को समझने के लिए धर्म के सत्य स्वरूप को समझना अत्यन्त आवश्यक है। अतः इस विषय पर थोड़े विस्तार से चिंतन आवश्यक है।

धर्म और मजहब में अन्तर

१.धर्म क्रियात्मक वस्तु है और मजहब विश्वासात्मक हैं।

२. धर्म ईश्वरीय सृष्टि नियमानुकूल मनुष्य के स्वभावानुकूल है, किन्तु मजहब मनुष्यकृत होने से अस्वाभाविक हैं।

३. धर्म शाश्वत, नित्य, सनातन, अद्वितीय और अपरिवर्तनशील है, परन्तु मजहब मनुष्यकृत होने से अनित्य, परिवर्तनशील, अनेक और परस्पर विरुद्ध भिन्न-भिन्न हैं।

४. धर्म का सम्बन्ध मानव मात्र से है, किसी विशेष देश, जाति या वर्ग से नहीं, किन्तु मजहब देश और काल से प्रभावित होता है तथा यह एक सामूहिक संगठन के लिये होता है।

५. धर्म मनुष्य के आचरण का विषय है, परन्तु मजहब में किसी का अनुयायी होना ही पर्याप्त है।

६. धर्म सदाचारी बनाता है, परन्तु मजहब में किसी का अनुयायी होना ही पर्याप्त है।

७. कोई मनुष्य धर्म का संस्थापक नहीं, किन्तु मजहब या सम्प्रदाय का कोई संस्थापक अवश्य होना चाहिये।

८. धर्म मनुष्य को मनुष्य बनाता है, किन्तु मजहब मनुष्य को मजहबी अथवा पन्थाई और अंधविश्वासी बनाता है।

९. धर्म में बाह्य चिह्नों का कोई स्थान नहीं- **'न लिंग धर्म कारणम्।'** किन्तु मजहब के लिए बाह्य चिह्न नितान्त आवश्यक है।

१०. धर्म मानसिक दासता को छुड़ाता है, किन्तु मजहब मानसिक दासता में बाँधता है।

११. धर्म मनुष्य को पुरुषार्थी बनाता है, किन्तु मजहब मनुष्य को आलस्य का पाठ पढ़ता है।

१२. धर्म सब प्राणियों का हित चिन्तक है, किन्तु मजहब अपने अनुयायी या सम्प्रदाय विशेष के ही हितचिन्तक हैं।

१३. धर्म सभी प्राणियों के प्रति स्नेह-ममता रखना सिखाता है, किन्तु मजहब अपने सम्प्रदाय विशेष को ही आपस में न लड़ने का निर्देश करता है तथा अन्यों की मारकाट या लूट की खुली छूट है।

१४. मजहब में अकल की दखल नहीं, किन्तु धर्म में तर्क की आवश्यकता है-

'यस्तर्केणानुसंधत्ते स: धर्मो'

१५. धर्म और विज्ञान में परस्पर अविरोध होता है जबकि अनेकों मजहबी बात विज्ञान विरुद्ध हैं।

इस प्रकार धर्म और मजहब में अनेक भेद हैं। आधुनिक युग में अज्ञानतावश मजहब को धर्म समझ कर राजनीति में धर्म का कोई दखल नहीं होना चाहिये, ऐसा मान लिया गया है किन्तु आधुनिक युग के प्रसिद्ध राजनीतिक दार्शनकि महर्षि दयानन्द अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के षष्ठ समुल्लास में, राजनीति को राजधर्म नाम देकर राजनीति के साथ धर्म का अटूट सम्बन्ध स्थापित करते हैं। वे इस समुल्लास के प्रारम्भ में लिखते हैं- **'अथ राजधर्मान् व्याख्यास्याम:'** भाव यह कि राजा का धर्म यानी राजा और राजकर्मचारियों का कर्त्तव्य तथा प्रजाओं के कर्त्तव्य विषय में व्याख्या करेंगे।

जहाँ राजा और राजकर्मचारी अपने धर्म का पालन करते हैं, प्रजा अपने धर्म का पालन करती है तभी श्रीवृद्धि और सुखैश्वर्य की वृद्धि होती है तभी तो जिससे, राष्ट्र-श्री वृद्धि होती है उसे महर्षि दयानन्द ने 'राजधर्म' नाम दिया है। महाभारत में राजधर्म के अभिप्राय को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है। 'लोक रंजनमेवात्र राज्ञा धर्मः सनातनम्' (महाभारत शान्तिपर्व ५७/११) अर्थात् लोक में प्रजा को प्रसन्न रखना ही राजाओं का सनातन धर्म है।

महर्षि दयानन्द के लिए धर्म का स्वरूप अत्यन्त व्यापक है। यह सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक है। धर्म का सम्बन्ध मनुष्य मात्र से है। यह भारत के लिए अलग हो, अन्य राष्ट्रों के लिए अलग, ऐसा नहीं है। धर्म सभी मजहबों के लिए भी एक ही है। यह पूजा पद्धति, उपासना की बाह्य पद्धति मात्र नहीं है। प्रत्येक मानव को अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए, अभ्युदय व निःश्रेयस दोनों की सिद्धि के लिए धर्म से सम्बन्ध रखना ही होगा। महर्षि जी के विचारों में, लेखन में, जहाँ भी धर्म का प्रयोग हुआ है इन्हीं व्यापक अर्थों में हुआ है। वेदों में इसी धर्म का प्रतिपादन है।

वस्तुतः हमारे यहाँ नीति और धर्म शब्द का इतने गम्भीर अर्थों में प्रयोग किया गया है कि संसार की अन्य किसी भाषा में उनके पर्यायवाची शब्द नहीं मिलते। धर्म शब्द की महिमा गाते हुए महाभारतकार ने लिखा है कि-

धारणाद्धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजा:।
य: स्याद् धारण संयुक्त: स वै धर्म इति स्मृत:।।

धर्म शब्द का योगार्थ है- जो धारण करे। राजनीतिक नियम राष्ट्र को धारण करते हैं, इसलिए वे धर्म हैं। हमारे सब धर्मसूत्रों, स्मृतियों आदि में सर्वत्र राज्य नियमों के लिए धर्म शब्द ही प्रयुक्त हुआ है।

सत्यार्थप्रकाश के 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' के अन्तर्गत महर्षि ने लिखा है कि-

'जो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है, उसको 'धर्म' और जो पक्षपातसहित, अन्यायाचरण, मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञाभंग वेद विरुद्ध हैं, उसको 'अधर्म' मानता हूँ।'

स्पष्ट है कि 'धर्म' का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए, अथवा राज्य को धर्मनिरपेक्ष होना चाहिये- यह उद्घोष 'धर्म' के गूढ़ार्थ को न समझने के कारण किया जाता है। धर्म के जिस स्वरूप की व्याख्या महर्षि ने की है, उसकी उपेक्षा के कारण ही आज राजनीति दूषित हो गयी है, और समाज पापाचार में ग्रस्त हो गया है। यदि राजनीति में धर्म आ जाए तो वह पवित्र हो जाती है और इसके विपरीत यदि धर्म में राजनीति आ जाए तो वह मनुष्य के लिए भयानक रूप से घातक हो जाता है।

वस्तुतः प्राचीन वैदिक संस्कृति तथा महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण से धर्म का सम्पूर्ण एवं वास्तविक स्वरूप न जिन्दावस्था, न गीता, न पुराण, न धम्मपद, न बाइबिल, न कुरान में है और न ही किसी मठ, मंदिर, मस्जिद, चर्च, आश्रम, संस्था, विहार, तीर्थ-स्नान, कर्मकाण्ड और न उपवास में है। धर्म केवल ईश्वरीय नियमानुकूल यथार्थ ज्ञान वेदोक्त आचरण में है।

प्रो. डनिंग के शब्दों में- 'भारतीय आर्यों ने अपनी राजनीति को धार्मिक और अध्यात्मवादी पर्यावरण से, जिसमें कि यह आज भी गड़ी हुई है, कभी भी पृथक् नहीं किया।'

सम्पादक- अशोक आर्य

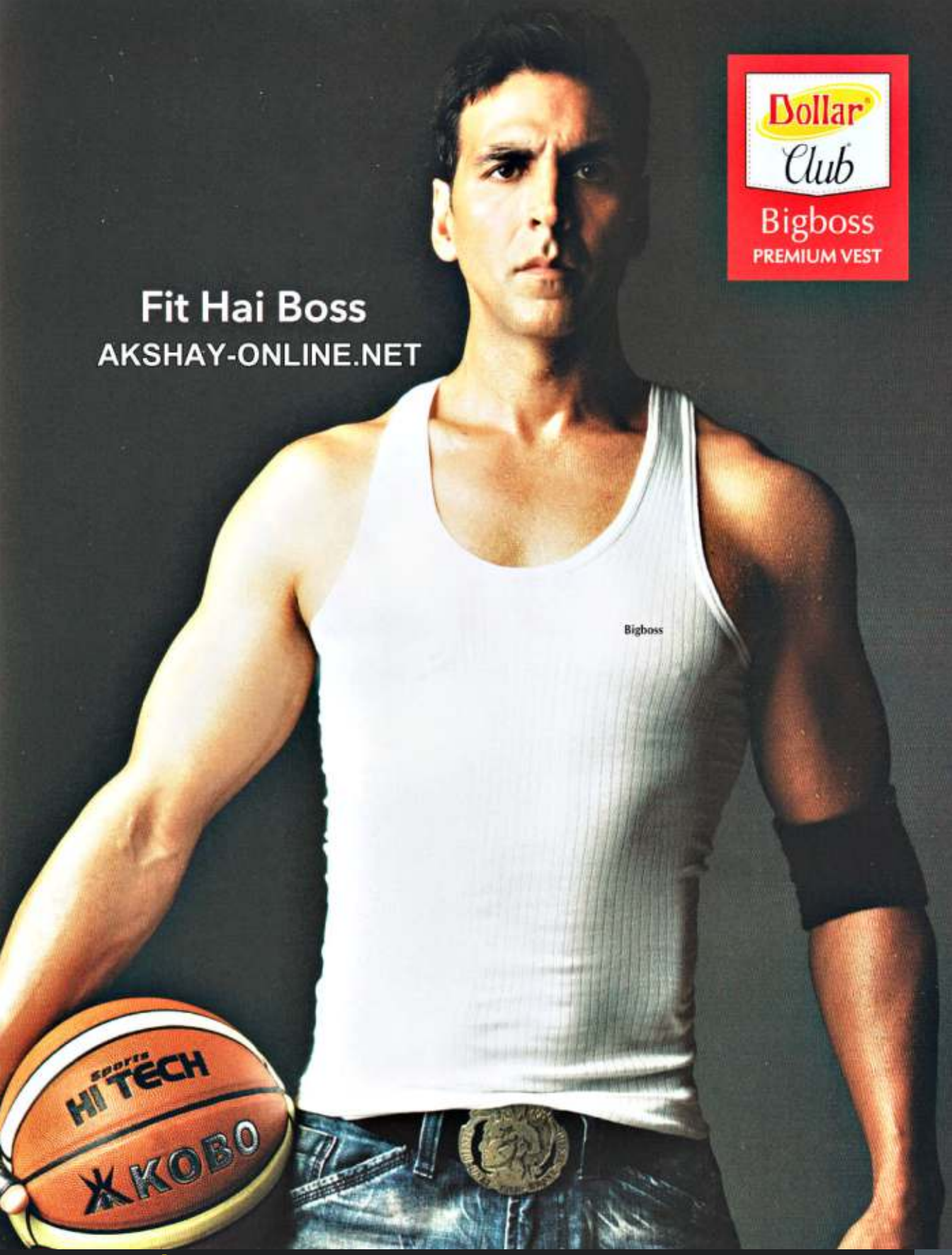
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
AKSHAY-ONLINE.NET
Bigboss
HI TECH
KOBO

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2016 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

पूर्णकृपायुक्त जननी अपने सन्तानों का सुख और उन्नति चाहती है।

स. प्र. पृ. २१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- शास्त्री सर्कल, पोस्ट ऑफिस, उदयपुर